

वर्ष भर की
संकटनाशक

गणेश चतुर्थी व्रतकथाएं

प्रकाशक :

रणधीर प्रकाशन
रेलवे रोड, आरती होटल के पीछे
हरिद्वार-249401
दूरभाष : (01334) 6297

मुख्य विक्रेता :

१. पुस्तक संसार बड़ा बाजार, हरिद्वार
२. पुस्तक संसार, नुमाईश का मैदान, जम्मू
३. गगनदीप पुस्तक भण्डार, एस.एन. नगर, हरिद्वार

मूल्य : बीस रुपये

मुद्रक :
राजा ऑफसेट प्रिंटर्स,
विकास मार्ग, दिल्ली-९२

गणेश चतुर्थी कथाओं का क्रम

गणेश पूजन सामग्री

(१) चन्दन केसरिया
(२) रोली—५
(३) अबीर—५
(४) बुक्का—५
(५) नारा—५
(६) धूपबत्ती—२५
(७) सिन्दूर—१० ग्राम
(८) कपूर—1 डिबिया
(९) माला (१०) छुट्टा फूल
दूब १०८, घी का दीपक १, सुपारी २५
पान छुट्टा ५, यज्ञोपवीत २,
पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, चीनी)

पंचमेवा २५० ग्राम, कसोरा २०
नैवेद्य-बेसन का लड्डू २५० ग्राम, आटा चौक पूरने के लिए,
ऋतुफल—केला, सन्तरा, सेव आदि। पेड़ा, बतासा,
गणेश मूर्ति— (सुवर्ण, चाँदी या मिट्टी की)
गंगाजल, गणेशजी को चढ़ाने का वस्त्र
चावल २०० ग्राम तथा इत्र

हवन सामग्री

(तिल ५० ग्राम, जव ५० ग्राम, चावल, घी, चीनी (प्रत्येक १२५ ग्राम)
समिधा, गंगा की मृत्तिका, ब्रह्मा का पूर्णपात्र, गोहरी, लकड़ी, भुना हुआ
गेहूँ २०० ग्राम, गुड़ २०० ग्राम, धान का लावा, सिंहासन, पंचपात्र,
आचमनी।

****

☆ श्रीमहागणाधिपतये नमः ☆

वर्ष भर की

संकट नाशन गणेश चतुर्थी व्रत-कथाएँ

१. चैत्रकृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा मकरध्वज नामक राजा की कथा

पार्वती जी ने पूछा कि हे गणेश जी! चैत्र कृष्ण चतुर्थी को गणेश की पूजा कैसे करनी चाहिए इस दिन भोजन क्या करना चाहिए? चैत्र मास के गणपति देवता का क्या नाम है? उनके पूजन आदि का क्या विधान है, सो आप मुझसे कहिए?

गणेश जी ने कहा कि महादेवी! चैत्र कृष्ण चतुर्थी के दिन 'विकट' नामक गणेश की पूजा करनी चाहिए। दिन भर व्रत रखकर रात्रि में षोडशोपचार से पूजन करना चाहिए। ब्राह्मण भोजन के अनन्तर स्वयं व्रती को इस दिन पंचगव्य (गौ का गोबर, मूत्र, दूध, दही, घी) पान करके रहना चाहिए। यह व्रत संकटनाशक है। इस दिन शुद्ध घी के साथ बिजौरे, नीबू का हवन करने से बांझ स्त्रियां भी पुत्रवती होती हैं। हे शैलपुत्री! इसका इतिहास बहुत विचित्र है, मैं उसे कह रहा हूँ। इसके स्मरण मात्र से ही मनुष्य को सिद्धि मिलती है।

प्राचीन काल में सतयुग में मकरध्वज नामक एक राजा हुए। वे प्रजा पालन के प्रेमी थे। उनके राज्य में कोई निर्धन नहीं था। चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) अपने-अपने धर्मों का पालन करते थे। प्रजाओं को चोर-डाकू आदि का भय नहीं था। प्रजा स्वस्थ रहती थी।

सभी लोग उदार, सुन्दर, बुद्धिमान, दानी और धार्मिक थे। इतना सुन्दर राज्य-शासन होते हुए भी राजा को पुत्र की प्राप्ति नहीं हुई। तत्पश्चात महर्षि याज्ञवल्क्य की कृपा से उन्हें कालान्तर में एक पुत्र की प्राप्ति हुई। राजा राज्य का भार अपने मंत्री धर्मपाल पर सौंपकर, विविध प्रकार के खेल-खिलौने से अपने राजकुमार का पालन-पोषण करने लगे। राज्य शासन हाथ में आ जाने के कारण मंत्री धर्मपाल धन-धान्य द्वारा समृद्ध हो गए। मंत्री महोदय को एक से एक बढ़कर पाँच पुत्र हुए। मंत्री-पुत्रों का धूमधाम के साथ विवाह हुआ और वे सब धन का उपभोग करने लगे। मंत्री के सबसे छोटे लड़के की बहू अत्यन्त धर्मपरायणी थी। चैत्रकृष्ण चतुर्थी आने पर उसने भक्तिपूर्वक गणेश जी की पूजा की। उसका पूजन और व्रत देखकर उसकी सास कहने लगी-अरी! क्या तंत्र-मंत्र द्वारा मेरे पुत्र को वश में करने का उपाय कर रही है। बार-बार सास के निषेध किए

जाने पर भी जब बहू न मानी तो सास ने कहा-अरी दुष्टा! तू मेरी बात मान नहीं रही है, मैं पीटकर तुझे ठीक कर दूंगी, मुझे यह सब तांत्रिक अभिचार पसंद नहीं हैं। इसके उत्तर में बहू ने कहा-हे सासू जी, मैं संकट नाशक गणेश जी का व्रत कर रही हूँ, यह व्रत अत्यन्त फलदायक होता है। अपनी पतोहु की बात सुनकर उसने अपने पुत्र से कहा कि-हे पुत्र! तुम्हारी बहू जादू टोने पर उतारू हो गई है, मेरे कई बार मना करने पर भी वह दुराग्रह वश नहीं मान रही। इस दुष्टा को मार पीट कर ठीक कर दो। मैं गणेश को नहीं जानती, ये कौन हैं और इनका व्रत कैसे होता है? हम लोग तो राजकुल के मनुष्य हैं, फिर हम लोगों की किस विपत्ति को ये नष्ट करेंगे। माता की प्रेरणा से उसने बहू को मारा पीटा। इतनी पीड़ा सहकर भी उसने व्रत किया। पूजनोपरान्त वह गणेश जी का स्मरण करती हुई उनसे प्रार्थना करने लगी कि हे गणेश जी! हे गणपति! आप हमारे

सास ससुर को किसी प्रकार का कष्ट दीजिए। हे गणेश्वर! जिससे उनके मन में आपके प्रति भक्तिभाव जाग्रत हो। विभु विश्वात्मा गणेश जी ने सबके देखते ही देखते राजकुमार का अपहरण करके मंत्री धर्मपाल के महल में छिपाकर रख दिया। बाद में उसके वस्त्र, आभूषण आदि उतार कर राजमहल में फेंक दिए और स्वयं अन्तर्धान हो गए। इधर राजा ने अपने पुत्र को शीघ्रता से पुकारा, परन्तु कोई प्रत्युत्तर न मिला। फिर उन्होंने मंत्री के महल में जाकर पूछा कि मेरा राजकुमार कहां चला गया? महल में उसके सभी वस्त्राभूषण तो हैं लेकिन राजकुमार कहाँ चला गया है? किसने ऐसा निन्दनीय कार्य किया है? हाय! मेरा राजकुमार कहां गया?

राजा की बात सुनकर मंत्री ने उत्तर दिया-हे राजन! आपका चंचल पुत्र कहां चला गया, इसका मुझे पता नहीं है। मैं अभी गाँव, नगर, बाग-बगीचे आदि सभी स्थानों में खोज कराता हूं। इसके बाद राजा अपने

सभी नौकरों, सेवकों आदि से कहने लगे। हे अंगरक्षकों! मंत्रियों! मेरे पुत्र का पता शीघ्र ही लगाओ। राजा का आदेश पाकर दूत लोग सभी स्थानों में खोज करने लगे। जब कहीं भी पता न लगा तो आकर राजा से डरते-डरते निवेदन किया कि महाराज! अपहरणकारियों का कहीं सुराग न मिला। राजकुमार को आते जाते किसी ने नहीं देखा। उनकी बातों को सुनकर राजा ने मंत्री को बुलवाया। मंत्री से राजा ने पूछा कि मेरा राजकुमार कहां है? हे धर्मपाल! मुझसे साफ-साफ बता दे कि राजकुमार कहाँ है? उसके वस्त्राभूषण तो दिखाई पड़ते हैं, केवल वही नहीं है! अरे नीच! मैं तुम्हारा वध कर डालूंगा। तेरे कुल को नष्ट कर दूँगा- इसमें जरा भी सन्देह नहीं है। राजा द्वारा डांट पड़ने पर मंत्री चकित हो गया। मंत्री ने सर झुकाकर कहा कि हे भूपाल! मैं पता लगाता हूँ। इस नगर में बालक अपरहरणकर्ताओं का कोई गिरोह नहीं है और न ही डाकू आदि

रहते हैं। फिर भी हे प्रभु! पता नहीं किसने ऐसा नीच कर्म किया और न जाने वह कहाँ चला गया? धर्मपाल ने आकर महल में अपनी पत्नी और पुत्रों से पूछा। अपनी सभी बहुओं को बुलाकर भी उसने पूछा कि यह कर्म किसने किया है? यदि राजकुमार का पता नहीं लगा तो राजा मुझ अभागे के वंश का विनाश कर देंगे। ससुर की बात सुनकर छोटी बहू ने कहा कि हे दादा जी! आप इतने चिन्तित क्यों हो रहे हैं। आप पर गणेश जी का कोप हुआ है। इसलिए आप गणेश जी की आराधना कीजिए। राजा से लेकर नगर के समस्त स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध संकट नाशक चतुर्थी का व्रत विधिपूर्वक करें तो गणेश जी की कृपा से राजकुमार मिल जायेंगे, मेरा वचन कभी मिथ्या नहीं होगा। छोटी बहू की बात सुनकर ससुर ने हाथ जोड़कर कहा कि हे बहू! तुम धन्य हो, तुम मेरा और मेरे कुल का उद्धार कर दोगी। गणेश जी की पूजा कैसे की जाती है? हे

सुलक्षणी मुझे बताओ। मैं मन्द बुद्धि होने के कारण व्रत के महात्म्य को नहीं जानता हूँ। हे कल्याणी! हम लोगों से जो भी अपराध हुआ हो, उसे क्षमा कर दो और राजकुमार का पता लगा दो। तब सब लोगों ने कष्टनाशक गणेश चतुर्थी का व्रत करना आरम्भ किया। राजा सहित समस्त प्रजाजनों ने गणेश जी की प्रसन्नता के लिए व्रत किया। इससे गणेश जी प्रसन्न हो गए। सब लोगों के देखते ही देखते उन्होंने राजकुमार को प्रकट कर दिया। राजकुमार को देखकर नगरवासी आश्चर्य में पड़ गए। सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। राजा के हर्ष की तो सीमा न रही। राजा कह उठे-गणेशजी धन्य हैं और साथ ही साथ मंत्री की कल्याणी पतोहू भी धन्य है। जिसकी कृपा से मेरा पुत्र यमराज के जहां जाकर भी लौट आया। अतः सब लोग इस सन्तानदायक व्रत को निरन्तर विधिपूर्वक करते रहें।

श्रीकृष्ण ने कहा कि हे राजा युधिष्ठिर! त्रैलोक्य में इससे बढ़कर कोई दूसरा व्रत नहीं है। हे कुरुकुलदीपक! आप भी अपने लिए क्लेशों के शमनार्थ इस व्रत को अवश्य कीजिए। श्रीकृष्ण जी के मुख से इस कथा को विस्तार पूर्वक सुनकर युधिष्ठिर ने बड़े ही भक्ति भाव से चैत्रकृष्ण चतुर्थी का व्रत किया और गणपति की कृपा से अपने खोये हुए राज्य को पुनः प्राप्त कर लिया।

****



बैशाख कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा

२. धर्मकेतु नामक ब्राह्मण की कथा

पार्वती जी ने पूछा-बैशाख महीने के कृष्ण पक्ष की जो संकटा नामक चतुर्थी कही गई है, उस दिन किस गणेश का, किस विधि से पूजन करना चाहिए और उस दिन भोजन में क्या ग्रहण करना चाहिए?

गणेशजी ने उत्तर दिया-हे माता! बैशाख कृष्ण चतुर्थी के दिन व्रत करना चाहिए। उस दिन 'वक्रतुण्ड' नामक गणेश की पूजा करके भोजन में कमलगट्टे का हलुवा लेना चाहिए। हे जननी! द्वापर युग में राजा युधिष्ठिर ने इस प्रश्न को पूछा था और उसके उत्तर में जो कुछ भगवान कृष्ण ने कहा था, मैं उसी इतिहास का वर्णन करता हूँ। आप श्रद्धायुक्त होकर सुनें। श्रीकृष्ण बोले-हे राजा युधिष्ठिर! इस कल्याण दात्री चतुर्थी

का जिसने व्रत किया और उसे जो फल प्राप्त हुआ, मैं उसे ही कह रहा हूँ।

प्राचीन काल में एक रन्तिदेव नामक प्रतापी राजा हुए हैं। जिस प्रकार आग तृण समूहों को जला डालती है उसी प्रकार वे अपने शत्रुओं के विनाशक थे। उनकी मित्रता यम, कुबेर, इन्द्रादिक देवों से थी। उन्हीं के राज्य में धर्मकेतु नामक एक श्रेष्ठ ब्राह्मण रहते थे। उनके दो स्त्रियाँ थीं- एक का नाम सुशीला और दूसरी का नाम चंचला था। सुशीला नित्य ही कोई-न-कोई व्रत किया करती थी। फलतः उसने अपने शरीर को दुर्बल बना डाला था। इसके विपरीत चंचला कभी भी कोई व्रत-उपवास आदि न करके भरपेट भोजन करती थी।

इधर सुशीला को सुन्दर लक्षणों वाली एक कन्या हुई और उधर चंचला को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह देखकर चंचला बारम्बार सुशीला को

ताना देने लगी।

अरी सुशीला! तूने इतना व्रत उपवास करके शरीर को जर्जर बना डाला, फिर भी एक कृशकाय कन्या को जन्म दिया। मुझे देख, मैं कभी व्रतादि के चक्कर में न पड़कर हृष्ट-पुष्ट बनी हुई हूं और वैसे ही बालक को भी उत्पन्न किया है।

अपनी सौत का व्यंग्य बाण सुशीला के हृदय में चुभने लगा। वह पतिव्रता विधिवत गणेशजी की उपासना करने लगी जब सुशीला ने भक्तिभाव से संकटनाशक गणेश चतुर्थी का व्रत किया तो रात्रि में वरदायक गणेशजी ने उसे दर्शन दिया।

श्री गणेशजी ने कहा-हे सुशीले! तेरी आराधना से हम अत्यधिक सन्तुष्ट हैं। मैं तुम्हें वरदान दे रहा हूँ कि तेरी कन्या के मुख से निरन्तर मोती और मूँगा प्रवाहित होते रहेंगे। हे कल्याणी! इससे तुझे सदा प्रसन्नता रहेगी।

हे सुशीले! तुझे वेद शास्त्र वेत्ता एक पुत्र भी उत्पन्न होगा। इस प्रकार का वरदान देकर गणेश जी वहीं अन्तर्धान हो गये।

वरदान प्राप्ति के फलस्वरूप उस कन्या के मुँह से सदैव मोती और मूंगा झड़ने लगे। कुछ दिनों के बाद सुशीला को एक पुत्र उत्पन्न हुआ तदनन्तर धर्मकेतु स्वर्गगामी हो गया। उसकी मृत्यु के अनन्तर चंचला घर का सारा धन लेकर दूसरे घर में जाकर रहने लगी, परन्तु सुशीला पतिगृह में रहकर ही पुत्र और पुत्री का पालन पोषण करने लगी। उस कन्या के मुँह से मोती मूंगा गिरने के फलस्वरूप सुशीला के पास अल्प समय में ही बहुत-सा धन एकत्रित हो गया। इस कारण चंचला उससे ईर्ष्या करने लगी। एक दिन हत्या करने के उद्देश्य से चंचला ने सुशीला की कन्या को कुएँ में ढकेल दिया। उस कुएँ में गणेश जी ने उसकी रक्षा की और वह बालिका सकुशल अपनी माता के पास लौट आई। उस बालिका

को जीवित देखकर चंचला का मन उद्विग्न हो उठा। वह सोचने लगी कि जिसकी रक्षा ईश्वर करता है उसे कौन मार सकता है? इधर सुशीला अपनी पुत्री को पुनः प्राप्त कर प्रसन्न हो गई। पुत्री को छाती से लगाकर उसने कहा-श्री गणेश जी ने तुझे पुनःजीवन दिया है। अनाथों के नाथ गणेश जी ही हैं। चंचला आकर उसके पैरों में नतमस्तक हुई। उसे देखकर सुशीला जी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

चंचला हाथ जोड़कर कहने लगी-हे बहिन सुशीले! मैं बहुत ही पापिन और दुष्टा हूँ। आप मेरे अपराधों को क्षमा कीजिए। आप दयावती हैं, आपने दोनों कुलों का उद्धार कर दिया। जिसका रक्षक देवता होता है उसका मानव क्या बिगाड़ सकता है? जो लोग सन्तों एवं सत्पुरुषों का दोष देखते हैं वे अपनी करनी से स्वयं नाश को प्राप्त होते हैं। इसके बाद चंचला ने भी उस कष्ट निवारक पुण्यदायक संकट नाशक गणेश जी

के व्रत को किया। श्री गणेश जी के अनुग्रह से परस्पर उन दोनों में प्रेम भाव स्थापित हो गया। जिस पर गणेश जी की कृपा होती है उसके शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। सुशीला द्वारा संकटनाशन गणेश चतुर्थी व्रत किये जाने के कारण ही उसकी सौत चंचला का हृदय परिवर्तन हो गया। श्री गणेश जी कहते हैं कि हे देवी! पूर्वकाल का पूरा वृत्तान्त आपको सुना दिया। इस लोक में इससे श्रेष्ठ विघ्नविनाशक कोई दूसरा व्रत नहीं है। श्री कृष्ण जी कहते हैं कि हे धर्मराज! आप भी विधिपूर्वक गणेश जी का व्रत कीजिए। इसके करने से आपके शत्रुओं का नाश होगा तथा अष्टसिद्धियां और नवनिधियाँ आपके सामने करबद्ध होकर खड़ी रहेंगी। हे धर्मपरायण! युधिष्ठिर! आप अपने भाईयों, धर्मपत्नी और माता के सहित इस व्रत को कीजिये। इससे थोड़े समय में ही आप अपने राज्य को प्राप्त कर लेंगे।

३. ज्येष्ठ कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा
दयादेव नामक ब्राह्मण की कथा

पार्वती जी ने पूछा कि हे पुत्र! ज्येष्ठ मास की चतुर्थी का किस प्रकार पूजन करना चाहिए? इस महीने के गणेश जी का क्या नाम है? भोजन के रूप में कौन-सा पदार्थ ग्रहण करना चाहिए? इसकी विधि का आप संक्षेप में वर्णन कीजिए।

गणेश जी ने कहा-हे माता! ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी सौभाग्य एवं पति प्रदायिनी है। इस दिन आखु (मूषक) रथा नामक गणेश जी की पूजा भक्तिपूर्वक करनी चाएिए। इस दिन घी निर्मित भोज्य पदार्थ अर्थात हलुवा, लड्डू, पूड़ी आदि बनाकर गणेश जी को अर्पित करें। ब्राह्मण भोजन के पश्चात स्वयं भोजन करें। हे पार्वती माता! इससे सम्बन्धित

मैं पूर्वकालीन इतिहास का वर्णन कर रहा हूँ। गणेश पूजन और व्रत की विधि जो पुराण में वर्णित है, उसे सुनिए।

सतयुग में सौ यज्ञ करने वाले एक पृथु नामक राजा हुए। उनके राज्यान्तर्गत दयादेव नामक एक ब्राह्मण रहते थे। वेदों में निष्णात उनके चार पुत्र थे। पिता ने अपने पुत्रों का विवाह गृहसूत्र के वैदिक विधान से कर दिया। उन चारों बहुओं में बड़ी बहू अपनी सास से कहने लगी-हे सासूजी! मैं बचपन से ही संकटनाशन गणेश चतुर्थी का व्रत करती आई हूँ। मैंने पितृगृह में भी इस शुभदायक व्रत को किया है। अतः हे कल्याणी! आप मुझे यहाँ व्रतानुष्ठान करने (व्रत रहने) की अनुमति प्रदान करें। पुत्र वधू की बात सुनकर उसके ससुर ने कहा-हे बहू! तुम सभी बहुओं में श्रेष्ठ और बड़ी हो। तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं है और न तो तुम भिक्षुणी हो। ऐसी स्थिति में तुम किस लिए व्रत करना चाहती हो?

हे सौभाग्यवती! अभी तुम्हारा समय उपभोग करने का है। ये गणेश जी कौन हैं? फिर तुम्हें करना ही क्या है?

कुछ समय के पश्चात बड़ी बहू गर्भिणी हो गई। दस मास के बाद उसने सुन्दर बालक का प्रसव किया। उसकी सास बराबर बहू को व्रत करने का निषेध करने लगी और व्रत छोड़ने के लिए बहू को बाध्य करने लगी। व्रत भंग होने के फलस्वरूप गणेश जी कुछ दिनों में कुपित हो गये और उसके पुत्र के विवाह-काल में वर-वधू के सुमंगली के समय उसके पुत्र का अपहरण कर लिया। इस अनहोनी घटना से मण्डप में खलबली मच गई। सब लोग व्याकुल होकर कहने लगे-लड़का कहाँ गया? किसने अपहरण कर लिया? बारातियों द्वारा ऐसा समाचार पाकर उसकी माता अपने ससुर दयादेव से रो-रोकर कहने लगी। हे ससुर जी! आपने मेरे गणेश चतुर्थी व्रत को छुड़वा दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप ही मेरा पुत्र

विलुप्त (गायब) हो गया है। अपनी पुत्रवधू के मुख से ऐसी बात सुनकर ब्राह्मण दयादेव बहुत दुःखी हुए। साथ ही पुत्रवधू भी दुःखित हुई। पति के लिए दुःखित पुत्रवधू प्रति मास संकटनाशन गणेश चतुर्थी का व्रत करने लगी।

एक समय की बात है कि एक वेदज्ञ और दुर्बल ब्राह्मण भिक्षाटन के लिए इस मधुरभाषिणी के घर आया। ब्राह्मण ने कहा कि हे बेटी! मुझे भिक्षा स्वरूप इतना भोजन दो कि मेरी क्षुधा शान्त हो जाए। उस ब्राह्मण की बात सुनकर उस धर्मपरायण कन्या ने उस ब्राह्मण का विधिवत पूजन किया। भक्ति पूर्वक भोजन कराने के बाद उसने ब्राह्मण को वस्त्रादि दिए। कन्या की सेवा से सन्तुष्ट होकर ब्राह्मण कहने लगा-हे कल्याणी! हम तुम पर प्रसन्न हैं, तुम अपनी इच्छा के अनुकूल मुझसे वरदान प्राप्त कर लो। मैं ब्राह्मण वेशधारी गणेश हूँ और तुम्हारी प्रीति के कारण

आया हूँ। ब्राह्मण की बात सुनकर कन्या हाथ जोड़कर निवेदन करने लगी- हे विघ्नेश्वर! यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे मेरे पति के दर्शन करा दीजिए। कन्या की बात सुनकर गणेश जी ने उससे कहा कि हे सुन्दर विचार वाली, जो तुम चाहती हो वही होगा। तुम्हारा पति शीघ्र ही आवेगा। कन्या को इस प्रकार का वरदान देकर गणेश जी वहीं अन्तर्निहित हो गए।

उसी समय की बात है कि सोमशर्मा नामक ब्राह्मण एक वन में से उस द्विज बालक को नगर में लाये। अपने पौत्र को देखकर दयादेव नामक ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुए। बालक की माता के हर्ष की तो सीमा ही न रही साथ ही सम्पूर्ण नगरवासी भी प्रमुदित हुए। बालक की माता ने पुत्र को छाती से लगा लिया और कहने लगी कि गणेश जी के प्रसाद से ही मैंने खोए हुए पुत्र को प्राप्त किया है। उसे नए वस्त्राभूषणों से अलंकृत

किया। दयादेव तो बारम्बार सोमशर्मा को प्रणाम कर कहने लगे कि हे द्विजराज! आपकी कृपा से मैंने खोये हुए पुत्र को प्राप्त किया है। खोया हुआ बालक घर में आ गया। सोमशर्मा को सुस्वादु भोजन कराकर, धोती दुपट्टा से विभूषित करके गोदान दिया। फिर से मण्डप का निर्माण करके विधिपूर्वक वैवाहिक कार्य सम्पन्न किया। इससे सभी पुरवासी प्रसन्न हुए वह भाग्यशालिनी कन्या अपने पति को पाकर धन्य हो उठी। ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी मनुष्यों के मनोरथ को पूर्ण करती है। इस दिन नर-नारियों को 'एकदन्त' गणेश की पूजा करनी चाहिए। हे देवी पूर्वकथित रीति से भक्ति पूर्वक जो व्यक्ति इस व्रत एवं पूजन को करेंगे उनकी सम्पूर्ण इच्छाएँ पूरी होंगी। श्रीकृष्णजी कहते हैं। हे राजन युधिष्ठिर! भगवान गणेश जी के व्रत का ऐसा ही महात्म्य है। हे महाराज! अपने शत्रुओं के विनाशार्थ आप भी इस व्रत को अवश्य कीजिए।

४. आषाढ़ कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा
राजा महीजित की कथा

पार्वती जी ने पूछा कि हे वत्स! आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी बहुत ही शुभदायिनी कही गई है। आप उसका विधान बतलाइए। इस मास के गणेश जी का क्या नाम है और उनकी पूजा किस प्रकार करनी चाहिए? गणेश जी ने उत्तर दिया कि हे माता! पूर्वकाल में इसी प्रश्न को युधिष्ठिर ने पूछा था और उन्हें भगवान कृष्ण ने जो उत्तर दिया था मैं उसको बतला रहा हूँ, आप सुनिए। श्रीकृष्ण ने कहा कि हे राजन्! गणेश जी की प्रीतिकारक, विघ्नेनाशक, पुराण इतिहास में वर्णित कथा को कह रहा हूँ। आप सुनिए। हे कुन्तीपुत्र! आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी के गणेश जी का नाम लम्बोदर ' है। उनका पूजन पूर्व वर्णित विधि से करें। हे महाराज!

द्वापर युग में महिष्मति नगरी का महीजित नामक राजा था। वह बड़ा ही पुण्यशील और प्रतापी राजा था। वह अपनी प्रजा का पालन पुत्रवत करता था। किन्तु सन्तानविहीन होने के कारण उसे राजमहल का वैभव अच्छा नहीं लगता था। वेदों में निःसंतान का जीवन व्यर्थ माना गया है। यदि सन्तानहीन व्यक्ति अपने पितरों को जल दान देता है तो उसके पितृगण उस जल को गरम जल के रूप में ग्रहण करते हैं। इसी ऊहापोह में राजा का बहुत समय व्यतीत हो गया। उन्होंने पुत्र प्राप्ति के लिए बहुत सेदान, यज्ञ यज्ञादि कार्य किया। फिर भी राजा को पुत्रोत्पत्ति न हुई। जवानी ढल गई और बुढ़ापा आ गया किन्तु वंश वृद्धि न हुई। तदनन्तर राजा ने विद्वान ब्राह्मणों और प्रजाजनों से इस सन्दर्भ में परामर्श किया। राजा ने कहा कि हे ब्राह्मणों तथा प्रजाजनों! हम तो सन्तानहीन हो गए, अब मेरी क्या गति होगी? मैंने जीवन में तो किंचित भी पाप कर्म नहीं किया। मैंने कभी

अत्याचार द्वारा धन संग्रह नहीं किया। मैंने तो सदैव प्रजाओं का पुत्रवत पालन किया तथा धर्माचरण द्वारा ही पृथ्वी का शासन किया। मैंने चोर-डाकुओं को दंडित किया। इष्ट मित्रों के भोजन की व्यवस्था की, गौ, ब्राह्मणों का हित चिन्तन करते हुए शिष्ट पुरुषों का आदर सत्कार किया। फिर भी हे द्विजसत्तमो! मुझे अब तक पुत्र न होने का क्या कारण है? विद्वान ब्राह्मणों ने कहा कि हे महाराज! हम लोग वैसा ही प्रयत्न करेंगे जिससे आपके वंश की वृद्धि हो। इस प्रकार कहकर सब लोग युक्ति सोचने लगे। सारी प्रजायें राजा के मनोरथ की सिद्धि के लिए ब्राह्मणों के साथ वन में चली गयी।

वन में जाकर वे लोग द्रुतगति से इधर उधर परिभ्रमण करने लगे। उन लोगों को उसी समय एक श्रेष्ठ मुनि के दर्शन हुए। वे मुनिराज निराहार रहकर तपस्या में लीन थे। ब्रह्माजी के समान वे आत्मजित, क्रोधजित

तथा सनातन पुरुष थे। सम्पूर्ण वेद-विशारद, दीर्घायु, अनन्त एवं अनेक ब्रह्म ज्ञान सम्पन्न वे महात्मा थे। उनका निर्मल नाम लोमश ऋषि था। प्रत्येक कल्पान्त में उनके एक-एक रोम पतित होते थे। इसीलिये उनका नाम लोमश ऋषि पड़ गया। ऐसे त्रिकालदर्शी महर्षि लोमश के उन लोगों ने दर्शन किये। सब लोग उन तेजस्वी मुनि के पास गये। उचित अभ्यर्थना एवं प्रणामादि के अनन्तर सभी लोग उनके समक्ष खड़े हो गये। मुनि के दर्शन से सभी लोग प्रसन्न होकर परस्पर कहने लगे कि हम लोगों को सौभाग्य से ही ऐसे मुनि के दर्शन हुए। इनके उपदेश से हम सभी का मंगल होगा, ऐसा निश्चय कर उन लोगों ने मुनिराज से कहा। जनता कहने लगी-हे ब्रह्मर्षि! हम लोगों के दुःख का कारण सुनिए। अपने सन्देह के निवारणार्थ हम लोग आपके शरणागत हुए हैं। हे भगवन! आप कोई उपाय बतलाइये। हे स्वामिन! आप जैसे महात्मा को पाकर हम लोग किसी अन्य व्यक्ति से क्या कहें? आप ब्राह्मण

एवं ऋषियों में श्रेष्ठ हैं। आपके बढ़कर कोई दूसरापुरुष नहीं दीख रहा है।

महर्षि लोमश ने पूछा-सज्जनों! आप लोग यहां किस अभिप्राय से आये हैं? मुझसे आपका क्या प्रयोजन है? स्पष्ट रूप से कहिए। मैं आपके सभी सन्देहों का निवारण करूंगा। हम आपके कल्याण की भावना रखते हैं। तपस्वियों की तपस्या केवल परोपकार के लिए ही होती है। प्रजाजनों ने उत्तर दिया-हे द्विजश्रेष्ठ! हम लोग जिस महान कार्य की सिद्धि के लिए यहाँ आये हैं, उसे सुनिये। हम महिष्मती नगरी के निवासी हैं हमारे राजा का नाम महीजित है। वह राजा ब्राह्मणों का रक्षक, धर्मात्मा, दानवीर, शूरवीर एवं मधुरभाषी है। उस राजा ने हम लोगों का पालन पोषण किया है, परन्तु ऐसे राजा को आज तक सन्तान की प्राप्ति नहीं हुई। हे भगवन! माता-पिता तो केवल जन्मदाता ही होते हैं, किन्तु राजा ही वास्तव में पोषक एवं संवर्धक होता है। उसी राजा के निमित्त हम लोग ऐसे गहन वन में

आये हैं। हे महर्षि! आप कोई ऐसी युक्ति बताइए जिससे राजा को सन्तान की प्राप्ति हो, क्योंकि ऐसे गुणवान राजा को कोई पुत्र न हो, यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। हम लोग परस्पर विचार विमर्श करके इस गम्भीर वन में आये हैं। उनके सौभाग्य से ही यहाँ हम लोगों ने आपका दर्शन लाभ किया। हे मुनिवर! किस व्रत, दान, पूजन आदि कर्म का अनुष्ठान कराने से राजा को पुत्र होगा। आप कृपा करके हम सभी को बतलावें?

प्रजाओं की बात सुनकर महर्षि ध्यानमग्न हो राजा के उपकार के लिए कहने लगे। महर्षि लोमेश ने कहा-हे ब्राह्मणों! आप लोग ध्यानपूर्वक सुनो। मैं संकट नाशन व्रत को बतला रहा हूँ। यह व्रत निःसंतान को संतानदायक एवं निर्धनों को धन दाता है। आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी को 'एकदन्त गजानन' नामक गणेश की पूजा करें। पूर्वोक्त विधि से राजा व्रत करके श्रद्धायुक्त हो ब्राह्मण भोजन करावें और उन्हें वस्त्र दान करें।

गणेश जी की कृपा से उन्हें अवश्य ही पुत्रोपलब्धि होगी। महर्षि लोमश की यह बात सुनकर सभी लोग करबद्ध होकर उठ खड़े हुए। नतमस्तक होकर दण्डवत प्रणाम करके सभी लोग नगर में लौट गए। वन में घटित सभी घटनाओं को प्रजाजनों ने राजा से बताया। पुरजनों की बात सुनकर सम्मानकारी विमल बुद्धिधारी राजा बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने श्रद्धा भक्ति से विधिवत गणेश चतुर्थी का व्रत करके ब्राह्मणों को भोजन वस्त्रादि का दान दिया। रानी सुदक्षिणा के गर्भाधान संस्कार के अनन्तर श्री गणेश जी की कृपा से राजा को सुन्दर और सुलक्षण पुत्र प्राप्त हुआ। राजा ने सम्पूर्ण नगरवासियों को सन्तुष्ट करके पुत्रोत्सव मनाया। राजा महीजित ने ब्राह्मणों को धन देकर तृप्त किया। श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि हे राजन! इस व्रत का ऐसा ही प्रभाव है। जो व्यक्ति इस व्रत को श्रद्धान्वित होकर करेंगे वे समस्त सांसारिक सुख के अधिकारी होंगे।

श्रीकृष्ण जी ने कहा कि हे महाराज! आप भी इस व्रत को विधिपूर्वक कीजिए। श्री गणेश जी की कृपा से आपकी सभी मनोकामनायें पूर्ण होंगी। आपके सम्पूर्ण शत्रुओं विनाश होगा और आप अचल राज्य के अधिकारी बनेंगे। हे भूपशिरोमणि युधिष्ठिर! जो पुरुष इस व्रत को करते हैं। वे चाहे एकान्तसेवी ऋषि हों अथवा विद्वान, उन्हें निर्विघ्न रूप से पौत्रादि की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य गणेश जी के चरित्र को सुनते अथवा सुनाते हैं, उन्हें सब कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है।

****

श्रावण कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा

५. गणेश भक्तों के लिए सन्तानादि प्रदायक कथा

ऋषिगण पूछते हैं कि हे स्कन्द कुमार! दरिद्रता, शोक, कुष्ठ आदि से विकलांग, शत्रुओं से सन्तप्त, राज्य से निष्कासित राजा, सदैव दुःखी रहने वाले, धनहीन, समस्त उपद्रवों से पीड़ित, विद्याहीन, सन्तानहीन, घर से निष्कासित लोगों, रोगियों एवं अपने कल्याण की कामना करने वाले लोगों को क्या उपाय करना चाहिए जिससे उनका कल्याण हो और उनके उपरोक्त कष्टों का निवारण हो। यदि आप कोई उपाय जानते हों तो उसे बतलाइए।

स्वामी कीर्तिकेय जी ने कहा-हे ऋषियों! आपने जो प्रश्न किया है, उसके निवारार्थ मैं आप लोगों को एक शुभदायक व्रत बतलाता हूँ, उसे

सुनिए। इस व्रत के करने से पृथ्वी के समस्त प्राणी सभी संकटों से मुक्त हो जाते हैं। यह व्रतराज महापुण्यकारी एवं मानवों को सभी कार्यों में सफलता प्रदान करने वाला है। विशेषतया यदि इस व्रत को महिलायें करें तो उन्हें सन्तान एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। इस व्रत को धर्मराज युधिष्ठिर ने किया था। पूर्वकाल में राज्यच्युत होकर अपने भाइयों के साथ जब धर्मराज वन में चले गये थे, तो उस वनवास काल में भगवान श्रीकृष्ण ने उनसे कहा था। युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण से अपने कष्टों के शमनार्थ जो प्रश्न किया था, उस कथा को आप श्रवण कीजिए।

युधिष्ठिर पूछते हैं कि, हे पुरुषोत्तम! ऐसा कौन सा उपाय है जिससे हम वर्तमान संकटों से मुक्त हो सकें। हे गदाधर! आप सर्वज्ञ हैं। हम लोगों को आगे अब किसी प्रकार का कष्ट न भुगनता पड़े, ऐसा उपाय बतलाइये।

स्कन्दकुमार जी कहते हैं कि जब धैर्यवान युधिष्ठिर विनम्र भाव से हाथ जोड़कर, बारम्बार अपने कष्टों के निवारण का उपाय पूछने लगे तो भगवान हृषीकेश ने कहा।

श्रीकृष्ण जी ने कहा कि हे राजन! सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला एक बहुत बड़ा गुप्त व्रत है। हे पुरुषोत्तम! इस व्रत के सम्बन्ध में मैंने आज तक किसी को नहीं बतलाया है। हे राजन! प्राचीनकाल में सत्ययुग की बात है कि पर्वतराज हिमाचल की सुन्दर कन्या पार्वती ने शंकर जी को पति रूप में प्राप्त करने के लिए गहन वन में जाकर कठोर तपस्या की। परन्तु भगवान शिव प्रसन्न होकर प्रकट नहीं हुए तब शैलतनया पार्वतीजी ने अनादि काल से विद्यमान गणेश जी का स्मरण किया। गणेश जी को उसी क्षण प्रकट देखकर पार्वती जी ने पूछा कि मैंने कठोर, दुर्लभ एवं लोमहर्षक तपस्या की, किन्तु अपने प्रिय भगवान

शिव को प्राप्त न कर सकी। वह कष्टविनाशक दिव्य व्रत जिसे नारद जी ने कहा है और जो आपका ही व्रत है, उस प्राचीन व्रत के तत्व को आप मुझसे कहिये। पार्वती जी की बात सुनकर तत्कालीन सिद्धि दाता गणेश जी उस कष्टनाशक, शुभदायक व्रत का प्रेम से वर्णन करने लगे।

गणेश जी ने कहा- हे अचलसुते! अत्यन्त पुण्यकारी एवं समस्त कष्टनाशक व्रत को कीजिए। इसके करने से आपकी सभी आकांक्षाएँ पूर्ण होंगी और जो व्यक्ति इस व्रत को करेंगे उन्हें भी सफलता मिलेगी। हे देवाधिदेवेश्वरी! श्रावण के कृष्ण चतुर्थी की रात्रि में चन्द्रोदय होने पर पूजन करना चाहिए। उस दिन प्रातःकृत्य से निबटकर मन में संकल्प करें कि 'जब तक चन्द्रोदय नहीं होगा, मैं निराहार रहूँगी। पहले गणेश पूजन करके तभी भोजन ग्रहण करूंगी। मन में ऐसा निश्चय करना चाहिए। इसके बाद सफेद तिल के जल से स्नान करें। अपना नित्य कर्म करने

के बाद हे सुन्दर व्रत वाली! मेरा पूजन करें। यदि सामर्थ्य हो तो प्रतिमास स्वर्ण की मूर्ति का पूजन करें (अभाव में चांदी, अष्ट धातु अथवा मिट्टी की मूर्ति की ही पूजा करें) अपनी शक्ति के अनुसार सोने, चांदी, तांबे अथवा मिट्टी के कलश में जल भरकर उस पर गणेश जी की प्रतिमा स्थापित करें। मूर्ति कलश पर वस्त्राच्छादन करके अष्टदल कमल की आकृति बनावें और उसी मूर्ति की स्थापना करें। तत्पश्चात षोडशोपचार विधि से भक्ति पूर्वक पूजन करें। मूर्ति का ध्यान निम्न प्रकार से करें- हे लम्बोदर! चार भुजा वाले! तीन नेत्र वाले! लाल रंग वाले! हे नील वर्ण वाले! शोभा के भण्डार! प्रसन्न मुख वाले गणेश जी! मैं आपका ध्यान करता हूँ। हे गजानन! मैं आपका आवाहन करता हूँ। हे विघ्नराज! आपको प्रणाम करता हूँ, यह आसन है। हे लम्बोदर! यह आपके लिए पाद्य है, हे शंकरसुवन! यह आपके लिए अर्घ्य है। हे उमापुत्र! यह आपके

स्नानार्थ जल है। हे वक्रतुण्ड! यह आपके लिए आचमनीय जल है। हे शूर्पकर्ण! यह आपके लिए वस्त्र है। हे कुब्ज! यह आपके लिए यज्ञोपवीत है। हे गणेश्वर! यह आपके लिए रोली, चन्दन है। हे विघ्नविनाशन! यह आपके लिए फूल है। हे विकट! यह आपके लिए धूपबत्ती है। हे वामन! यह आपके लिए दीपक है। हे सर्वदेव! यह आपके लिए लड्डू का नैवेद्य है। हे सर्वार्त्तिनाशन देव! यह आपके निमित्त फल है। हे विघ्नहर्ता! यह आपके निमित्त मेरा प्रणाम है। प्रणाम करने के बाद क्षमा प्रार्थना करें। इस प्रकार षोडशोपचार रीति से पूजन करके नाना प्रकार के भक्ष्य पदार्थों को बनाकर भगवान को भोग लगावें। हे देवी! शुद्ध देशी घी में पन्द्रह लड्डू बनावें। सर्व प्रथम भगवान को लड्डू अर्पित करके उसमें से पाँच ब्राह्मण को दे दें। अपनी सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा देकर चन्द्रोदय होने पर भक्तिभाव से अर्घ्य देवें। तदनन्तर पाँच लड्डू का स्वयं भोजन करें।

फिर हे देवी! तुम सब तिथियों में सर्वोत्तम हो, गणेश जी की परम प्रियतमा हो। हे चतुर्थी हमारे द्वारा प्रदत्त अर्घ्य को ग्रहण करो, तुम्हें प्रणाम है। निम्न प्रकार से चन्द्रमा को अर्घ्य प्रदान करें—क्षीरसागर से उत्पन्न हे लक्ष्मी के भाई! हे निशाकर! रोहिणी सहित हे शशि! मेरे दिये हुये अर्घ्य को ग्रहण कीजिये। गणेश जी को इस प्रकार प्रणाम करें—हे लम्बोदर! आप सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हैं आपको प्रणाम है। हे समस्त विघ्नों के नाशक! आप मेरी अभिलाषाओं को पूर्ण करें। तत्पश्चात ब्राह्मण की प्रार्थना करें—हे द्विजराज! आपको नमस्कार है, आप साक्षात देवस्वरूप हैं। गणेश जी की प्रसन्नता के लिए हम आपको लड्डू समर्पित कर रहे हैं। आप हम दोनों का उद्धार करने के लिए दक्षिणा सहित इन पाँच लड्डुओं को स्वीकार करें। हम आपको नमस्कार करते हैं। इसके बाद ब्राह्मण भोजन कराकर गणेश जी से प्रार्थना करें। यदि इन सब कार्यों

के करने की शक्ति न हो तो अपने भाई-बन्धुओं के साथ दही एवं पूजन में निवेदित पदार्थ का भोजन करें। प्रार्थना करके प्रतिमा का विसर्जन करें और अपने गुरु को अन्न-वस्त्रादि एवं दक्षिणा के साथ मूर्ति दे देवें। इस प्रकार से विसर्जन करें—हे देवों में श्रेष्ठ! गणेश जी! आप अपने स्थान को प्रस्थान कीजिए एवं इस व्रत पूजा के फल को दीजिए।

हे सुमुखि! इस प्रकार जीवन भर गणेश चतुर्थी का व्रत करना चाहिए। यदि जन्म भर न कर सकें तो इक्कीस वर्ष तक करें। यदि इतना करना भी सम्भव न हो तो एक वर्ष तक बारहों महीने के व्रत को करें। यदि इतना भी न कर सकें तो वर्ष के एक मास को अवश्य ही व्रत करें और श्रावण चतुर्थी को व्रत का उद्यापन करें।

****

उद्यापन विधि

सर्व प्रथम सर्वशास्त्रवेत्ता गणपति-पूजक आचार्य का वरण करें, उनकी आज्ञा के अनुसार शास्त्रोक्त रीति से पूजन करें। अपनी शक्ति के अनुसार १००८, १०८, २८ तथा ८ लड्डू से गणपति हवन करें। केले के खम्भे एवं तोरण आदि से ऊँचा मण्डप बनावें। नृत्य, गीत-वाद्यादि से उत्सव करावें। भक्ति युक्त हो गुरु की पूजा करें। अपनी शक्ति के अनुसार सपत्नीक आचार्य को सुवर्ण, गौ, वस्त्र, आभूषण, छत्र, जूता, कमंडलु, भूमि आदि दान करें। हे देवि! गणेश जी की प्रसन्नता के निमित्त आचार्य का पूजन करके उन्हें सन्तुष्ट करें। इस प्रकार व्रत करने से मैं प्रसन्न होता हूँ, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। जो लोग मेरी पूजा भक्ति भाव से करते हैं, उनकी अभिलाषा मैं पूर्ण कर देता हूँ।

श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि हे युधिष्ठिर! प्राचीन काल में स्वयं गणेश जी ने पार्वती जी से कहा था और पार्वती जी ने उसी भांति आराधना की थी, जिससे उन्हें सफलता प्राप्त हुई। इसी व्रत के करने से पतिव्रता पार्वती का विवाह शिवजी से हुआ। जिनके साथ आज तक पार्वती जी गणेश जी की कृपा से विहार किया करती हैं। अतः हे महाराज युधिष्ठिर! आप भी इस संकट नाशन व्रत को करें। यह 'संकटा' नाम की चतुर्थी बड़ी शुभकारी है।

स्कन्दकुमार जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण जी के मुख से इस प्रकार संकटनाशक चतुर्थी व्रत सुनकर हे महर्षि! पूर्वकाल में राज्य प्राप्ति की कामना से युधिष्ठिर ने इस व्रत को किया। इस व्रत के प्रभाव से उन्होंने सम्पूर्ण शत्रुओं का विनाश करके राज्य प्राप्त किया।

इस व्रत के करने से चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) सुलभ

होते हैं। मनुष्य की आकांक्षाएँ पूर्ण होती हैं और बड़े-बड़े शासकों, पदाधिकारियों तक को अपने वश में कर लेते हैं। मनुष्यों पर किसी प्रकार का संकट आने पर इस व्रत को करने से संकट मुक्त हो जाता है। सीता जी के अन्वेषण में पवन कुमार हनुमानजी ने इस व्रत को किया था। पूर्वकाल में राजा बलि से संकट ग्रस्त होने पर रावण ने भी इस व्रत को किया था। गौतम पत्नि अहिल्या ने पति द्वारा शापग्रस्त होकर पतिवियोग के कारण इस व्रत को किया था। इस व्रत के करने से विद्यार्थी को विद्या तथा धनेच्छु को धन प्राप्ति होती है। संतान की इच्छा करने वाले को सन्तान प्राप्ति, रोगग्रस्त को व्याधिमुक्ति होती है। तथा गणेश जी की कृपा से मनुष्यों के सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

****

६. भाद्र कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा
राजा नल की कथा

पार्वती जी ने गणेश जी से पूछा कि हे पुत्र! भादों कृष्ण चतुर्थी को संकट नाशक चतुर्थी कहा गया है। अतः उस दिन का व्रत किस प्रकार किया जाता है। मुझसे समझाकर कहिए। गणेश जी ने कहा-हे माता! भादों कृष्ण चतुर्थी सब संकटों की नाशक, विविध फलदायक एवं सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाली है। पूर्ववर्णित विधि से ही पूजा करनी चाहिए। हे पार्वती! इस व्रत में आहार सम्बन्धी कुछ विशेषताएँ हैं, उन्हें बतला रहा हूँ। श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि हे युधिष्ठिर! पुत्र की ऐसी बात सुनकर पार्वती जी ने उनसे पूछा कि आहार एवं पूजन में क्या विशेषता है, उसे कहिए। गणेश जी ने कहा कि गुरु द्वारा वर्णित प्रणाली से इस दिन

भक्तिभाव से पूजन करें। बारहों महीनों में अलग-अलग नामों से गणेश जी की पूजा करनी चाहिए। विनायक, एकदन्त, कृष्णपिंग, गजानन, लम्बोदर, भालचन्द्र, हेरम्ब, विकट, वक्रतुण्ड, आखुरथ, विघ्नराज और गणाधिप इन बारहों नामों से व्रती को गणेश जी की पूजा करनी चाहिए। अलग-अलग महीने में क्रमशः एक-एक नामों से पूजा करें। चतुर्थी के दिन प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त हो व्रत का संकल्प करें, तत्पश्चात रात्रि में पूजन और कथा श्रवण करें।

पूर्वकाल में नल नामक एक पुण्यात्मा और यशस्वी राजा हुए उनकी रूपशालिनी रानी दमयन्ती नाम से प्रसिद्ध थीं। एक बार उन्हें शाप ग्रस्त होकर राज्यच्युत होना पड़ा और रानी के वियोग में कष्ट सहना पड़ा। तब उनकी रानी दमयन्ती ने इस सर्वोत्तम व्रत को किया। पार्वती जी ने पूछा कि हे पुत्र! दमयन्ती ने किस विधि से इस व्रत को किया और किस प्रकार

व्रत के प्रभाव से तीन महीने के अन्दर ही उन्हें अपने पति से मिलने का संयोग प्राप्त हुआ? इन सब बातों को आप बतलाइए। श्रीकृष्ण जी ने कहा कि हे युधिष्ठिर! पार्वती जी के ऐसा पूछने पर बुद्धि के भंडार गणेश जी ने जैसा उत्तर दिया, उसे मैं कह रहा हूँ, आप सुनिए। श्री गणेश जी कहते हैं कि हे माता! राजा नल को बड़ी-बड़ी आपदाओं का सामना करना पड़ा। हाथी खाने से हाथी और घुड़साल से घोड़ों का अपहरण हो गया। डाकुओं ने राजकोष लूट लिया और अग्नि की ज्वालाओं में घिरकर उनका माल भस्मसात हो गया। राज्य को नष्ट करने वाले मंत्री लोगों ने भी साथ छोड़ दिया। राजा जुए में सर्वस्व गंवा बैठे। उनकी राजधानी भी उनके हाथ से निकल गई। सभी ओर से निराश और असहाय होकर राजा नल वन में चले गए। वन में रहते समय उन्हें दमयन्ती के साथ अनेक कष्ट झेलने पड़े। इतना होते हुए भी उनका रानी से वियोग हो गया। तत्पश्चात

राजा किसी नगर में सईस का काम करने लगे। रानी किसी दूसरे नगर में रहने लगी तथा राजकुमार भी अन्यत्र नौकरी करने लगा। जो किसी समय राजा, रानी, राजपुत्र कहे जाते थे, वे ही अब भिक्षा मांगने लगे। तरह-तरह के रोगों से पीड़ित होकर, एक दूसरे से विलग होकर कर्म फल को भोगते हुए दिन बिताने लगे।

एक समय की बात है कि वन में भटकते हुए दमयन्ती ने महर्षि शरभंग के दर्शन किये। उसने उनके पैरों पर नतमस्तक हो हाथ जोड़कर कहा। दमयन्ती ने पूछा कि हे ऋषिराज! मेरा अपने पति से कब मिलन होगा? किस उपाय से मुझे हाथी-घोड़ों से युक्त घनी आबादी वाली नगरी मिलेगी? मेरा भाग्य कब लौटेगा? हे मुनिवर! आप निश्चित रूप से बतलाइए।

श्री गणेश जी कहते हैं कि दमयन्ती का यह उत्तम प्रश्न सुनकर शरभंग

मुनि ने कहा कि हे दमयन्ती! मैं तुम्हारे कल्याण की बात बता रहा हूँ, सुनो। इससे घोर संकट का नाश होता है, यह सब कामनाएँ पूर्ण करने वाला एवं शुभदायक है। भादों मास की कृष्ण चतुर्थी संकटनाशन कही गयी है। इस प्रकार नर-नारियों को एकदन्त गजानन की पूजा करनी चाहिए। विधिपूर्वक व्रत एवं पूजन करने से ही, हे रानी! तुम्हारी सम्पूर्ण इच्छाएँ पूरी होंगी। सात महीने के अन्दर ही तुम्हारा पति से मिलन होगा। यह बात मैं निश्चय पूर्वक कहता हूँ। गणेश जी कहते हैं कि शरभंग मुनि का ऐसा आदेश पाकर, दमयन्ती ने भादों की संकटनाशिनी चतुर्थी व्रत प्रारम्भ किया और तभी से बराबर प्रतिमास गणेश जी का पूजन करने लगी। सात ही महीने में, हे राजन! इस उत्तम व्रत को करने से उसे पति, राज्य, पुत्र और पूर्व कालीन वैभव आदि की प्राप्ति हो गई।

श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि हे पृथा पुत्र युधिष्ठिर! इसी प्रकार इस व्रत

को करने से आपको भी राज्य की प्राप्ति होगी और आपके सभी शत्रुओं का नाश होगा, यह निश्चय है। हे राजन! इस प्रकार मैंने सभी व्रतों में उत्तम व्रत का वर्णन किया। यह सब कष्टों का नाश करता हुआ आपके भाग्य की वृद्धि करेगा।



७. भाद्रशुक्ल गणेश चतुर्थी व्रत कथा
स्यमन्तक मणि की कथा

एक बार नैमिषारण्य तीर्थ में शौनक आदि अट्ठासी हजार ऋषियों ने शास्त्रवेत्ता सूतजी से पूछा कि-हे सूतजी महाराज! सभी कार्यों की निर्विघ्न समाप्ति किस प्रकार से हो? धनोपार्जन में कैसे सफलता मिल सकती है और मनुष्यों की पुत्र, सौभाग्य एवं सम्पत्ति की वृद्धि किस प्रकार हो सकती है? पति-पत्नी में कलह भाव से बचाव, भाई-भाई में परस्पर वैमनस्य से अलगाव तथा उदासीनता से अनुकूलता कैसे मिल सकती है? विद्योपार्जन, वाणिज्य-व्यापार, कृषि कर्म एवं शासकों को अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करने में कैसे सफलता मिल सकती है? किस देवता के पूजन अर्चन से मनुष्यों को अभीष्ट की प्राप्ति हो सकती है? हे सूतजी महाराज! इन सब

बातों की आप विस्तृत विवेचना कीजिए।

सूतजी कहते हैं कि हे ऋषियों! प्राचीनकाल में जब कौरव-पाण्डवों की सेना युद्ध के लिए सन्नद्ध हुई तो उसी समय कुन्ती नन्दन युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण जी से पूछा था। हे कृष्णजी! आप यह बतलाइये कि हमारी निर्विघ्न विजय किस प्रकार होगी? किस देवता की आराधना से हम अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे?

श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि हे वीर! पार्वती जी के मैल से उत्पन्न गणेश जी की पूजा कीजिए। उनकी पूजा से आप अपने राज्य को पा जायेंगे, यह निश्चित है।

युधिष्ठिर ने प्रश्न किया कि हे देव! गणेश पूजन का क्या विधान है? किस तिथि को पूजा करने से वे सिद्धि देते हैं? श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि हे महाराज! भादों महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को इनकी पूजा करनी

चाहिए अथवा श्रावण, अगहन एवं माघ मास की चतुर्थी को भी पूजा की जा सकती है।

हे राजन युधिष्ठिर! यदि आप में श्रद्धा भाव हो तो भादों शुक्ल चतुर्थी से ही गणेश जी की पूजा प्रारम्भ कर दीजिए। व्रती को चाहिए कि प्रातःकाल उठकर सफेद तिल से स्नान करें। दोपहर में सोने की मूर्ति चार तोले, दो तोले, एक तोले या आधा तोले की अपनी सामर्थ्य के अनुसार बनवावें। यदि सम्भव न हो तो चांदी की प्रतिमा ही बनवा लें। यदि ऐसा न कर सकें तो मिट्टी की मूर्ति बनवा लें। परन्तु अर्थ सम्पन्न होते हुए कृपणता न करें। ये ही 'वरविनाशक' और ये ही 'सिद्धिविनायक' हैं। मनोवांछा की सिद्धि के लिए भादों शुक्ल चौथ को इनकी पूजा करें। इनकी पूजा करने से सम्पूर्ण आकांक्षाएँ पूर्ण होती हैं, एतदर्थ भूमण्डल में इन्हें 'सिद्धिविनायक' कहा जाता है। ध्यान की विधि-एक दांत वाले, सूप

के समान विस्तृत कान वाले, हाथी के समान मुख वाले, चार भुजाधारी, हाथ में पाश एवं अंकुश धारण किए हुए 'सिद्धविनायक' गणेश जी का हम ध्यान करते हैं। एकाग्रचित्त से पूजन करें। पंचामृत से स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान करावें। तदनन्तर भक्ति पूर्वक गणेश जी को गन्ध चढ़ावें, आवाहन करके पाद्य, अर्घ्य आदि देने के बाद दो लाल वस्त्र चढ़ाना चाहिए। तत्पश्चात पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य अर्पित करना चाहिए। फिर पान के ऊपर कुछ मात्रा में सोना रखकर (अथवा रुपया, अठन्नी आदि) चढ़ावें। इसके बाद गणेश जी को इक्कीस दूब चढ़ावें। निम्नांकित नामों द्वारा भक्तिपूर्वक गणेश जी की पूजा दूर्वा से करें। हे गणाधिप! हे उमापुत्र! हे पाप के नाशक! हे विनायक! हे ईशनन्दन! हे सर्वसिद्धिदाता! हे एकदन्त! हे गजमुख! हे मूषकवाहन! हे स्कन्दकुमार के ज्येष्ठ भ्राता! हे गजानन महाराज! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। रोली, पुष्प

एवं अक्षत के साथ दो-दो दूब लेकर प्रत्येक नाम का उच्चारण करते हुए अलग-अलग नामों से दूब अर्पित करें। हे देवाधिदेव! आप मेरे दूब को स्वीकार करें, मैं आपकी बारम्बार विनती कर रहा हूँ। इसी प्रकार भुना हुआ गेहूँ और गुड़ अर्थात गुड़ धनिया, जो गणेश जी को परमप्रिय है, चढ़ावें। इसके बाद शुद्ध घी से निर्मित इक्कीस लड्डू हाथ में लेकर हे कुरुकुल प्रदीप! कहकर गणेश जी के आगे रख दें। उनमें से दस लड्डू ब्राह्मण को दान कर दें और दस लड्डू अपने भोजन के निमित्त रख लें। शेष लड्डू को गणेश जी के सामने नैवेद्य के रूप में पड़ा रहने दें। सुवर्ण प्रतिमा भी ब्राह्मण को दान दे दें। सभी कर्म करने के बाद अपने इष्ट देव का पूजन करें। तदनन्तर ब्राह्मण को भोजन कराकर स्वयं भोजन करें। स्मरण रहे कि उस दिन मूंगफली, वनस्पति, बर्रे आदि के तेल का उपयोग न करें। अधोवस्त्र और उत्तरीय वस्त्र के सहित गणेश जी की मूर्ति को

सम्पूर्ण विघ्न निवारण के लिए विद्वान ब्राह्मण को दान कर दें। हे धर्मराज युधिष्ठिर! इस प्रकार गणेश जी की पूजा करने से आप सभी पाण्डवों की विजय होगी। इसमें सन्देह की कोई बात नहीं है, यह मैं बिल्कुल सत्य कह रहा हूँ। गुरु से दीक्षा लेने के समय वैष्णव आदि प्रारम्भ में गणेश पूजन करते हैं। गणेश जी की पूजा करने से विष्णु, शिव, सूर्य, पार्वती (दुर्गा), अग्नि आदि विशिष्ट देवों की भी पूजा हो जाती है। इसमें सन्देह नहीं है। इनके पूजन से चण्डिका आदि मातृगण सभी प्रसन्न होते हैं। हे ऋषियों! भक्तिपूर्वक सिद्धिविनायक गणेश जी की पूजा करने से, उनकी कृपा के फलस्वरूप मनुष्यों के सभी कार्य पूर्ण होते हैं।

भाद्र शुक्ल गणेश चतुर्थी की पूजा शिव लोक में हुई है। इस दिन स्नान, दान, उपवास, पूजन आदि करने से गणेश जी की अनुकम्पा से शताधिक फल होता है। हे युधिष्ठिर! इस दिन चन्द्र दर्शन को निषेध

किया गया है। इसलिए अपने कल्याण की कामना से दोपहर में ही पूजा कर लेनी चाहिए।

सिंह राशि की संक्रान्ति में, शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को चन्द्र दर्शन करने से (चोरी, व्यभिचार, हत्या आदि का) मिथ्या कलंकित होना पड़ता है। इसलिए आज के दिन चन्द्र दर्शन करना वर्जित है। यदि भूल से चन्द्र दर्शन हो जाय तो ऐसा कहें-'सिंह ने प्रसेनजित को मार डाला और जाम्बवान ने सिंह को यमालय भेज दिया। हे बेटा! रोओ मत, तुम्हारी स्यमन्तक मणि यह है।

****

स्यमन्तक मणि का उपाख्यान

नन्दिकेश्वर कहते हैं कि आप लोग दत्तचित्त होकर इस कथा को श्रवण करें। भादों शुक्ल चतुर्थी को सदैव सावधानी पूर्वक गणेश जी के शुभदायक व्रत को करें।

हे विप्रवर! नर अथवा नारी जो भी इस व्रत को करते हैं वे तुरन्त ही कष्टों से छुटकारा पा जाते हैं। उनके सभी कलंकों का शमन एवं विघ्ननिवारण होता है। सुनसान वन में विषम परिस्थिति में, अदालत सम्बन्धी मामलों में, सम्पूर्ण कार्यों में सफलता देने वाला यह व्रत सम्पूर्ण व्रतों में श्रेष्ठ है। यह वत विश्व-विश्रुत एवं गणेश जी को परम प्रिय है।

सनत्कुमार जी पूछते हैं कि प्राचीनकाल में इस व्रत को किसने किया था? इसका प्रचार मृत्युलोक में किस तरह हुआ? आप गणेश जी के व्रत

को विस्तारपूर्वक कहिए।

नन्दिकेश्वर ने कहा कि इस व्रत को सर्वप्रथम प्रतापवान भगवान वासुदेव जगन्नाथ (कृष्ण) जी ने किया था। जब उन पर झूठा दोषारोपण हुआ तो उसके शमनार्थ नारद जी ने उनसे इस व्रत को करने के लिए कहा था। सनत्कुमार ने आश्चर्यचकित होकर पुनः प्रश्न किया कि हे नन्दिकेश्वर! श्रीकृष्ण जी सर्वगुण सम्पन्न ऐश्वर्य युक्त भगवान हैं। सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता एवं संहारक हैं, अव्यय, अप्रेमय, निर्गुण एवं सगुण हैं। ऐसे घट-घट वासी भगवान कृष्ण को मिथ्या कलंक किस प्रकार लग गया? यह बात बहुत ही विस्मयकारी है। हे नन्दिकेश्वर! आप इस उपाख्यान का वर्णन कीजिए।

नन्दिकेश्वर कहने लगे-पृथ्वी का भार हरण करने के लिए भगवान पद्मनाभ (विष्णु) और हलधर बलरामजी ने, वसुदेव के पुत्ररूप में

अवतार धारण किया।

मगध सम्राट जरासन्ध के बार-बार आक्रमण करने के कारण कृष्ण जी ने विश्वकर्मा द्वारा समुद्र में स्वर्ण निर्मित द्वारिकापुरी बनवाई। उस पुरी में सोलह हजार रानियों के लिए सोलह हजार सुन्दर महलों को निर्मित कराया। उन रानियों के निवास के उपभोग के निमित्त पारिजात वृक्ष का आरोपण कराया। इसके अतिरिक्त छप्पन करोड़ यादवों के लिए छप्पन करोड़ भवनों की व्यवस्था की और अन्य (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्रादि) लोगों के निवास का भी प्रबन्ध करवाया, जहां जनता शान्ति पूर्वक बसती थी। त्रैलोक्य में उपलब्ध होने वाली जितनी वस्तुएँ थीं सभी का वहाँ संग्रह किया गया था। उस द्वारिकापुरी में उग्र नामक यादव के सत्राजित और प्रसेन नामक दो पुत्र हुए। समुद्र तट पर स्थित भाव से सूर्य नारायण को प्रसन्न करने के लिए वीर्यवान सत्राजित तपस्या करने लगे।

वे निराहार रहकर सूर्य की ओर टकटकी बांधकर आराधना करने लगे। भगवान सूर्य प्रसन्न होकर सत्राजित के समक्ष प्रकट हुए। सत्राजित भी अपने आराध्य के दर्शन से बहुत प्रसन्न हुए।

सत्राजित स्तुति करने लगे कि हे तेज पुंज! हे स्वतः प्रकाशवान! हे काश्यपेय! हे हरिदश्व! आपको मेरा बारम्बार प्रणाम है। हे ग्रहराज! हे चन्द्रमा को प्रकाशित करने वाले! हे वेदत्रयी स्वरूप! हे सम्पूर्ण देवों के अधिपति! आपको मेरा नमस्कार है। हे देवराज! आप मेरे पर प्रसन्न हों। हे दिवाकर! आपकी कृपा दृष्टि मरे ऊपर हो जाये। सत्राजित की ऐसी स्तुति से भगवान सूर्य ने सत्राजित से शान्त, गम्भीर एवं मधुर वाणी में कहा कि हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं। तुम्हारी जो अभिलाषा हो वह हमसे माँग लो। हे महाभाग्यशाली सत्राजित! हम तुम्हारी आराधना से सन्तुष्ट हैं। अब तुम इस सुन्दर रत्न को ले लो- यह देवों को भी अप्राप्य

हैं। ऐसा कहकर प्रसन्न मन से भगवान ने अपने कण्ठ से मणि उतारकर उसे दे दी। भगवान सूर्य ने उससे कहा कि यह प्रतिदिन आठ भार अर्थात २४ मन सोना प्रदान करती है। अतः मणि धारण करने के समय पवित्र रहना चाहिए। हे सत्राजित! अशौचावस्था में धारण करने से धारक का मरण हो जाता है। इतना कहकर तेजवान भगवान सूर्य वहीं अन्तर्धान हो गये। उस मणि को धारण करके सत्राजित ऐसे सुशोभित हुए मानो वह सूर्य नारायण ही हैं। हे राजन! उनके द्वारिकापुरी में प्रवेश करने पर उस तेज के कारण किसी को मालूम न हुआ कि कौन आ रहा है। उस कान्तिमान मणि को कण्ठ में धारण किये हुये वह कृष्ण जी की द्वारिका में तुरन्त ही चले आये। उस मणि की चमक से देखने वालों ने समझा कि साक्षात सूर्य भगवान ही आये हैं। जब लोगों ने समीप आकर स्पष्ट रूप से देखा तो उनकी समझ में आया कि यह सूर्य नहीं है ये तो सत्राजित

हैं जो कंठ में मणि धारण करने के कारण सुशोभित हो रहे हैं। सत्राजित के कंठ में स्यमन्तक मणि को देखकर भगवान कृष्ण का मन लालायित हो उठा, परन्तु उन्होंने उसे लेने की चेष्टा नहीं की। इधर सत्राजित के मन में सन्देह उत्पन्न हो गया कि कहीं कृष्णजी मुझसे यह मणि मांग न लें। इस भय से उसने उस मणि को अपने भाई प्रसेनजित को दे दिया साथ ही उसे पवित्र रहकर पहनने के लिए सावधान भी कर दिया।

एक समय की बात है कि प्रसेनजित उस मणि को पहने हुए ही कृष्णजी के साथ वन में आखेट के लिए गए। अशुचिता के कारण अश्वारूढ़ प्रसेनजित को एक शेर ने मार डाला। उस सिंह को रत्न लेकर जाते देखकर जाम्बवान ने मार डाला। जाम्बवान ने उस मणि को गुफा में लाकर अपने बेटे को दे दिया। इधर श्रीकृष्ण जी अपने सहयोगी शिकारियों के साथ द्वारिका में लौट आये।

समस्त द्वारिकावासियों ने अकेले कृष्ण को आया देखकर ऐसा अनुमान लगाया कि मणि के लोभ में कृष्ण ने प्रसेनजित की हत्या कर डाली है। ऐसा कौन-सा अधर्म है जो लोभी के लिए करणीय न हो। लोभी तो अपने गुरुजनों का भी वध कर डालता है- इसी प्रकार की चर्चा सब लोग करने लगे। झूठे दोषारोपण से कृष्ण जी के मन में बहुत ही दुःख हुआ और वे किसी से बिना कुछ कहे-सुने लोगों को साथ लेकर नगर से बाहर चले गये। वन में जाकर कृष्ण ने देखा कि एक स्थान पर प्रसेनजित सिंह द्वारा मृत होकर पड़े हैं। सवारी के साथ प्रसेनजित के पदचिन्हों के सहारे वहाँ गए जहाँ ऋक्ष ने सिंह को मारा था। रक्तबिन्दु के आधार पर श्रीकृष्ण उसकी गुफा में घुस गये। ऋक्षराज की गुफा बहुत ही भयंकर थी और उसमें गहन अंधेरा था। अतः प्रजाजनों को गुफा द्वार पर छोड़कर भगवान कृष्ण अकेले ही उसमें प्रविष्ट हो गए। अपने तेज से अन्धकार निवारण

करते हुए भगवान उस गुफा में चार सौ कोस तक चले गए। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने रमणीक स्थान एवं महल को देखा। वहाँ पर जाम्बवान का पुत्र सुन्दर पालने में झूल रहा था और पालने में मणिरत्न लटक रहे थे। बालक के उस खिलौना स्वरूप मणि को लेने के लिए भगवान कृष्ण उसके निकट खड़े हो गये।

रूप लावण्य से पूर्ण कमलनयनी किशोरी उस पालने को झुला रही थी। वह मन्द मुस्कान भी बिखेर रही थी-ऐसी नवयुवती बाला को देख कर कृष्ण जी विस्मित हो गये। वह कमल मुखी बाला धीरे-धीरे कह रही थी कि लाड़ले! तुम क्यों रो रहे हो? देखो, प्रसेनजित को सिंह ने मार डाला और सिंह को हमारे पिता जी ने मारकर, यह स्यमन्तक मणि तुझे खेलने के लिए ला दी है। कमल नयन भगवान कृष्ण को देखकर वह बाला कामातुर होकर धीरे-धीरे प्यार भरी बात कहने लगी कि मेरे पिता

की दृष्टि पड़ने से पहले ही आप यहाँ से चले जाइए। यह सुनकर प्रतापवान कृष्ण जी हंसकर अपना पांचजन्य शंख बजाने लगे। उस शंखनाद से ऋक्षराज घबड़ाकर उठ बैठा और उनके पास चला आया। फलस्वरूप भगवान कृष्ण और जाम्बवान में परस्पर तुमुल युद्ध होने लगा। इस दृश्य से सभी नारियाँ चीत्कार करने लगीं और गुफा के नागरिक आश्चर्य में पड़ गये। उधर गुफा द्वार पर कृष्ण की प्रतीक्षा कर रहे पुरजन उन्हें मृत समझकर सातवें दिन द्वारिका लौट गये। वहाँ पहुँच कर उन लोगों ने उनका मृतक कर्म कर डाला। इधर गुफा के अन्दर भगवान कृष्ण और ऋक्षराज में इक्कीस दिनों तक लगातार मल्लयुद्ध होता रहा। भगवान कृष्ण ने ऋक्षराज के युद्धोन्माद को क्षीण कर दिया। त्रेतायुग की बातों का स्मरण कर जाम्बवान ने भगवान को पहचान लिया।

जाम्बवान कहने लगे कि मैं सभी देवों, दैत्यों, यक्षों, नागों, गन्धर्वों,

पिशाचों और मरूदगणों से अपराजेय हूँ वे लोग मेरे पराक्रम के समक्ष नहीं टिक सकते। हे देवाधिदेव! आपने मेरे पर विजय पायी है, इससे आपका देवाधिपति होना निश्चित है। मैं समझ गया कि आप में भगवान विष्णु का तेज है, किसी अन्य में इतना बल नहीं हो सकता। जिसके किंचित कृपाकटाक्ष से चारों पदार्थ सुलभ हो जाते हैं, उसके किंचित रोष से घड़ियाल, मगरमच्छ आदि जीव व्याकुल हो गये और अथाह सागर भी विक्षुब्ध हो उठा। उस सागर ने अपनी धृष्टता के लिए क्षमा याचना की और सेना के लिए मार्ग प्रदान किया। आपने सेतु बांध कर अपने यश को उज्जवल किया और सैन्यदल के साल लंका पर आक्रमण करके राक्षसों का अपने बाणों द्वारा शिरच्छेदन किया। आप त्रेतायुग के वही धनुर्धारी राम हैं। हे महाराज! जब जाम्बवान ने पहचान लिया तो उससे देवकी नन्दन श्रीकृष्ण जी कहने लगे।

भगवान कृष्ण ऋक्षराज के मस्तक पर अपना कल्याणकारी हाथ फेरते हुए उससे प्रेमपूर्वक कहने लगे। हे ऋक्षराज! इस मणि के कारण मुझे झूठा कलंक लगा है। उसी कलंक के निवारणार्थ मणि प्राप्त करने के लिए मैं तुम्हारी गुफा में आया हूँ। भगवान की बात सुनकर जाम्बवान ने प्रसन्नता पूर्वक अपनी कन्या जाम्बवती को उन्हें समर्पित करके, दहेज स्वरूप मणि भी दे दी। भगवान कृष्ण ने कन्या और मणि ग्रहण कर जाम्बवान के दुर्लभ ज्ञान का उपदेश देकर जाने का विचार किया। भगवान कृष्ण के जाने से पहले जाम्बवान ने अपनी कन्या का पाणिग्रहण उनके साथ कर दिया। जाम्बवती के साथ मणि लेकर भगवान कृष्ण प्रसन्न मन से द्वारिका आये। जिस प्रकार किसी मृतक के पुनरुज्जीवित होने पर उसके परिवार वालों के हर्ष की सीमा नहीं रहती, वही अवस्था कृष्ण को देखकर द्वारिकावासियों की हुई। श्रीकृष्ण की धर्मपत्नी के

साथ मणि लेकर लौटा देखकर सभी लोग उत्सव मनाने लगे। भगवान कृष्ण प्रसन्न होकर मित्र वर्ग के साथ सुधर्मा सभा अर्थात यादवों की राज्यसभा में आये। वहां उन्होंने मणि के गायब होने और उसकी पुनः प्राप्ति की सारी घटना को कह सुनाया। भगवान कृष्ण ने राज्यसभा में उपस्थित सत्राजित को अपने पास बुलाकर उसे वह मणि दे दी। यादव संसद सदस्यों के सामने मणि देकर भगवान झूठे कलंक के दोष से मुक्त हो गये।

सत्राजित बुद्धिमान थे। मणि पाकर उन्हें लज्जा आई जिसके फलस्वरूप उन्होंने अपनी कन्या सत्यभामा का विवाह श्रीकृष्ण के साथ कर दिया। इसके बाद शतधन्वा, अक्रूर आदि दूषित हृदय वाले यादव मणि प्राप्ति के लिए सत्राजित से शत्रुता करने लगे।

एक बार की बात है कि श्रीकृष्ण जी कहीं गये हुए थे। उनकी

अनुपस्थिति में पापात्मा शतन्धवा ने सत्राजित की हत्या करके मणि अपने कब्जे में कर ली।

श्रीकृष्ण के लौटने पर सत्यभामा ने उन्हें सारी बातें बतलाईं। एक बार नगर में पुनः चर्चा उठी कि ये कृष्ण भीतर से तो काले अर्थात कलुषित हृदय वाले हैं और ऊपर से सीधे दीखते हैं। तब भगवान कृष्ण ने बलदेव जी से कहा कि भैया, शतधन्वा ने सत्राजित का वध कर डाला है। अतः अब वह मणि के साथ पलायन करने वाला है। शतधन्वा ने सत्राजित की हत्या करके हम लोगों की मणि का अपहरण कर लिया है। वह मणि हम लोगों के लिए भोग्य है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। यह बात जब शतधन्वा को मालूम हुई तो उसने भयभीत होकर मणि को अक्रूर को दे दिया। मणि देने के पश्चात वह एक घोड़ी पर आरूढ़ होकर दक्षिण की ओर भाग गया। इधर रथारूढ़ होकर बलराम और श्रीकृष्ण उसका पीछा

करने लगे। सौ योजन के बाद उसकी घोड़ी मार डाली गई, तब वह पैदल ही भागा। श्रीकृष्ण जी ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और उसका वध कर डाला। मणि के लिए इच्छुक कृष्ण जी ने रथारूढ़ बलदेव से कहा कि भैया! इसके पास से तो मणि नहीं मिली। कृष्ण की बात से बलराम जी ने रुष्ट होकर कहा-कृष्ण! तुमने सदैव से कपट का व्यवहार किया है। तुमसे बढ़कर लोलुप और पापी कोई अन्य व्यक्ति नहीं होगा। जब तुम धन के लोभ में पड़कर अपने सगे सम्बन्धियों की हत्या करने में भी नहीं चूकते तो ऐसा कौन भाई बन्धु होगा जो तुम्हारा साथ दे। तदनन्तर बलराम जी की तुष्टि के लिए श्रीकृष्ण ने शपथ के द्वारा उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास किया। ऐसे मिथ्यापवाद के क्लेश को सहन करना धिक्कार है—ऐसा कहकर बलदेव जी बरार (विदर्भ) देश की ओर चले गये और कृष्ण जी रथ में सवार होकर द्वारकापुरी में वापस लौट आये। कृष्ण के

लौटने पर द्वारकावासी पुनः चर्चा करने लगे कि कृष्ण ने अपने बड़े भाई बलराम जी को द्वारका से बाहर निकालकर अच्छा काम नहीं किया। मणि के लोभ में उन्हें ऐसा करना उचित नहीं था। इस लोकापवाद से श्रीकृष्ण के मन में बहुत ही खेद हुआ और उनका चेहरा मुरझा गया। इधर अक्रूर भी तीर्थाटन के लिए द्वारका से निकल पड़े। उन्होंने काशीपुरी में आकर यज्ञपति भगवान के लिए विष्णुयोग किया। अक्रूर ने उस मणि द्वारा दैनिक स्वर्ण प्राप्ति के द्वारा सभी लोगों को दक्षिणा देकर सन्तुष्ट किया। नगर में विभिन्न देवों के मन्दिरों का निर्माण कराया। सूर्य द्वारा प्रदत्त उस मणि को सदैव अक्रूर पवित्रता के साथ धारण करते थे। फलस्वरूप वे जहां भी रहते, वहाँ न तो कभी अकाल ही पड़ता था और न व्याधिजनित किसी रोग का ही प्रकोप होता था। भगवान कृष्ण सर्वज्ञ थे, वे सभी बातों को जानते थे। मनुष्य देहधारी होने के कारण लोकाचार

के लिए, मायाविष्टता में अपनी अज्ञानता प्रकट करते थे। देखो तो मणि के कारण भाई बलराम जी से विरोध हुआ, बार-बार तरह-तरह के अभियोग लगते रहे। अतः इतना कलंक कहाँ तक सहा जाय? कृष्ण जी की इस चिन्तातुरावस्था में ही वहाँ नारद जी आ पहुँचे। भगवान द्वारा अभ्यर्थित होकर, आसन पर सुखपूर्वक बैठकर मुनि कहने लगे।

नारद जी ने कहा कि हे भगवान! आप खिन्न क्यों दिखाई पड़ रहे हैं। आप किस चिन्ता में पड़े हुए हैं। हे केशव! आप सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझसे कहें।

श्रीकृष्ण जी ने कहा कि हे देवर्षि नारद! मुझे बार-बार अकारण कलंक लग रहा है, इस कारण मुझे अत्यन्त पश्चाताप है। मैं आपकी शरण में हूँ, आप मुझे चिन्ता रहित कीजिए।

नारद जी ने कहा कि हे देव! आप पर लगने वाले कलंक का कारण

मैं जानता हूँ। आपने भादों सुदी चतुर्थी को चन्द्रदर्शन किया है। इसीलिए आपको बार-बार कलंकित होना पड़ रहा है। नारद जी की बात सुनकर भगवान कृष्ण सारगर्भित वाणी में कहने लगे कि हे देवर्षि नारद जी! चतुर्थी के चन्द्रदर्शन से कैसे दोष लगता है, जबकि द्वितीया के चांद का लोग दर्शन करते हैं और उसका सुन्दर फल पाते हैं।

नारद जी ने कहा कि स्वयं गणेश जी ने दर्शनीय रूप वाले अर्थात सुन्दरतम रूप पर गर्व करने वाले चन्द्रमा को श्राप दिया है कि आज के दिन जो लोग तुम्हारे दर्शन करेंगे, समाज में उन्हें व्यर्थ ही निन्दा का पात्र होना पड़ेगा।

श्रीकृष्ण जी ने पूछा कि हे मुनिवर! अमृत की वृष्टि करने वाले चन्द्रमा को गणेश जी ने क्यों शाप दिया? आप इस सर्वोत्तम उपाख्यान का विस्तृत वर्णन कीजिए। नारद जी ने उत्तर दिया कि प्राचीन काल में ब्रह्मा, विष्णु

और शिव ने मिलकर गणेश जी को अष्टसिद्धि तथा नवनिधि को पत्नी स्वरूप प्रदान किया। तदनन्तर शास्त्रोक्त विधि से गणेश जी की पूजा करके, उन्हें सम्पूर्ण देवों में अग्रणी बनाकर प्रजापति ब्रह्मा जी उनकी स्तुति करने लगे।

ब्रह्मा जी ने कहा कि हे हाथी सदृश मुख वाले! हे गणपति! हे लम्बोदर! हे वरदायक! हे समस्त विद्याओं के अधिपति! हे देवताओं के अधिनायक! हे सृष्टिकर्ता, पालक एवं संहारकर्ता गणेश जी! जो लोग भक्तिपूर्वक आपको लड्डू चढ़ाकर पूजन करेंगे, उनके सभी विघ्न दूर हो जायेंगे और दुर्लभ सिद्धि प्राप्त होगी, इसमें संशय नहीं, जो देवता या दानव आपकी पूजा किए बिना सफलता की कामना करते हैं, उन्हें अरबों कल्प तक भी सिद्धि नहीं मिलती। हे गणाध्यक्ष! आपके कृपा कटाक्ष के बल पर सदा विष्णु पालन करते हैं तथा शिवजी संहार करते हैं। ऐसी स्थिति

में मेरी सामर्थ्य नहीं है जो मैं आपकी स्तुति कर सकूँ? ब्रह्मा जी के मुख से ऐसी स्तुति सुनकर गणेश जी ने विश्व के अधिपति ब्रह्मा जी से प्रेम पूर्वक कहा—

गणेश जी ने कहा कि हे जगत के रचियता ब्रह्मा जी! मैं आपकी भक्ति पूर्ण निश्छल स्तुति से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। आपकी जो इच्छा हो मुझसे वर के रूप में मांग लीजिए, मैं उसे पूर्ण करूँगा।

ब्रह्मा जी ने कहा कि हे प्रभु! सृष्टि के रचनाकाल में मुझे किसी प्रकार की बाधा न हो। यह सुनकर गणेश जी ने प्रसन्न मन से मुस्कराते हुए कहा-ऐसा ही होगा अर्थात आपका कार्य निर्विघ्न रूप से चलता रहेगा। ब्रह्मा जी अभीष्ट वरदान पाकर अपने लोक को चले गये। इधर स्वेच्छा से भ्रमण करने वाले गणेश जी ने सत्यलोक से चलकर, अपना अद्वितीय स्वरूप धारण किया, आकाश मार्ग से चन्द्रलोक में जा पहुँचे। रूपशाली

चन्द्रमा ने गणेश जी के ऐसे हास्य-योग्य स्वरूप को देखा जिसमें उनकी लम्बी सूँड, सूप के समान कान, लम्बे दांत, भारी भरकम तोंदीला पेट और चूहे के वाहन पर आसीन हैं। ऐसे विस्मयकारी रूप को देखने से रूपगर्वित चन्द्रमा को हँसी आ गई। चन्द्रमा के हंसने से गणेश जी कुपित हो गये, उनकी आंखें क्रोध से लाल हो गईं। उन्होंने चन्द्रमा को शाप दिया कि तुम दर्शनीय एवं सुन्दर रूप वाले मुझको देखकर हंस रहे हो।

गणेश जी ने कहा कि चन्द्रमा—तुम मददर्पित हो रहे हो। इसका फल तुम्हें बहुत जल्द भोंगना होगा। आज से शुक्ल चतुर्थी के दिन कोई भी व्यक्ति तुम्हारे पापी मुंह को नहीं देखेगा। जो व्यक्ति भूल से भी तुम्हारे मुख को देख लेगा उसे अवश्य कलंकित होना पड़ेगा। नारद जी कहते हैं कि हे कृष्ण जी! ऐसा भीषण शाप सुनकर विश्व में हा-हाकार मच गया और चन्द्रमा का मुख मलिन हो गया तथा वे जल में प्रविष्ट हो गए।

उसी दिन से चन्द्रमा अपना स्थान जल में बनाकर रहने लगे। इधर देवता, ऋषि और गन्धर्वों को बड़ी निराशा हुई और वे सब दुखी होकर देवराज इन्द्र के नेतृत्व में पितामह ब्रह्मा जी के लोक में गये। ब्रह्मा जी का दर्शन करने के बाद उन लोगों ने चन्द्रमा के वृत्तान्त का वर्णन कर दिया, कि आज गणेश जी ने चन्द्रमा को शाप दे दिया है। तब ब्रह्मा जी ने सोचकर उन देवताओं से कहा कि हे देवताओं! गणेश जी के शाप को कोई काट नहीं सकता है। न तो मैं ही काट सकता हूँ और न विष्णु, इन्द्रादि देवता ही। ऐसा निश्चय जानिए। इसलिए हे देवों! आप उन्हीं की शरण में जायें। वे ही चन्द्रमा को शाप मुक्त कर सकते हैं।

देवताओं ने पूछा कि हे पितामह! हे अतीव बुद्धिशाली! हे प्रभु! किस उपाय से गजानन प्रसन्न होकर वर देंगे? आप उसी उपाय को बतलाइए। ब्रह्मा जी ने कहा कि गणेश जी का पूजन विशेषतया कृष्ण चतुर्थी को

रात्रि में यत्न पूर्वक करना चाहिए। शुद्ध घी में उन्हें मालपूआ, लड्डू आदि बनाकर भोग लगाना चाहिए। स्वयं भी इच्छापूर्वक मिष्ठान्न, हलुवा, पूरी, खीर आदि का भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण करना चाहिए। ब्राह्मणों को दान स्वरूप गणेश जी की स्वर्ण प्रतिमा देनी चाहिए। शक्ति के अनुसार दक्षिणा दें, धन रहते हुए कृपणता नहीं करनी चाहिए। पूजन व्रतादि की विधि जानकर सब देवताओं ने देवगुरु बृहस्पति को भेजा और उन्होंने चन्द्रमा के पास जाकर ब्रह्मा जी की बताई हुई विधि सुनाई। चन्द्रमा ने ब्रह्मा जी की बताई हुई विधि के द्वारा गणेश जी का व्रत एवं पूजन किया। जिसके फलस्वरूप प्रसन्न होकर भगवान गणेश जी प्रसन्न हो गए। अपने सम्मुख गणेश जी को क्रीड़ा करते हुए देखकर चन्द्रदेव उनकी स्तुति करने लगे।

चन्द्रमा ने कहा-हे विभो! आप समस्त कारणों में आदि कारण हैं,

आप सर्वज्ञ एवं सबके जानने योग्य हैं, आप मुझ पर प्रसन्न होइए। हे देवाधिपति! हे जगन्निवास! हे लम्बोदर! हे वक्रतुण्ड! हे गणेश जी! हे ब्रह्मा विष्णु से पूजित! मैंने गर्व के कारण आपका उपहास किया था, उसके लिए मैं आपसे क्षमा प्रार्थी हूँ। आप मुझ पर प्रसन्न होइए। हे गणेश जी! जो आपकी पूजा न करके अर्थ सिद्धि की इच्छा रखते हैं। वे वास्तव में मूर्ख और संसार में अभागे हैं। मुझे अब आपके सम्पूर्ण प्रभाव का ज्ञान हो गया है। जो पापात्मा आपकी पूजा से विमुख रहते हैं, उन्हें नर्क में भी स्थान नहीं मिलता। चन्द्रमा द्वारा ऐसी स्तुति सुनकर गणेश जी हँसते हुए मेघ के समान गुरु गर्जना में बोले।

गणेश जी ने कहा कि हे चन्द्रमा! मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूँ। तुम्हारी जो इच्छा हो वह तुम मुझसे वरदान के रूप में मांग लो। मैं तुम्हें देने के लिए तैयार हूँ। चन्द्रमा ने कहा कि मेरा दर्शन सभी लोग पुनः पूर्ववत् करने लगें।

चन्द्रमा ने कहा कि हे गणेश्वर! आपकी कृपा से मेरे पाप-शाप दूर हो जायें।

यह सुनकर गणेश जी ने कहा कि हे चन्द्र! मैं तुम्हें इसके बदले दूसरा वरदान दे सकता हूँ। किन्तु यह नहीं दे सकता। विघ्नेश्वर गणेश जी के ऐसे वचन को सुनकर ब्रह्मादि देवगण अत्यन्त भयभीत होकर भक्तवत्सल गणेश जी की प्रार्थना करने लगे।

देवता लोग निवेदन करने लगे कि हे देवाधिदेव! आप चन्द्रमा को शाप मुक्त कर दें, यही वरदान हम सभी आपसे चाहते हैं। आप ब्रह्मा जी के बड़प्पन का विचार कर चन्द्रमा को शापामुक्त कर दें। देवताओं की बात सुनकर गणेश जी ने बड़े ही आदर के साथ कहा कि आप लोग मेरे भक्त हैं, अतः मैं आप लोगों को अभीष्ट वर प्रदान करता हूँ।

गणेश जी ने कहा कि जो लोग भादों सुदी चौथ को चन्द्रमा का दर्शन

करेंगे उन्हें मिथ्या कलंक तो अवश्य ही लगेगा, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है किन्तु महीने के आरम्भ में, शुक्ल द्वितीया के दिन जो व्यक्ति हर महीने में निरन्तर तुम्हारा दर्शन करते रहेंगे, उन्हें भादों सुदी चौथ के दर्शन का दुष्परिणाम नहीं भोगना होगा। नारद जी कहते हैं कि हे कृष्ण! तभी से द्वितीया के दिन सब लोग आदर पूर्वक चन्द्र दर्शन करने लगे। स्वयं गणेश जी ने द्वितीया के चन्द्रदर्शन की महत्ता का वर्णन किया है। किन्तु दूज के चन्द्रमा का दर्शन करने वाले जो पापात्मा भाद्र शुक्ल चतुर्थी को तुम्हारा दर्शन करेंगे उन्हें एक वर्ष के भीतर ही मिथ्या कलंक का भागी होना पड़ेगा। इसके पश्चात् चन्द्रमा ने गणेश जी से पुनः पूछा कि यदि ऐसी घटना घटित हो जाये तो हे देवाधिपति! आप किस उपाय से प्रसन्न होंगे, यह बताने की कृपा कीजिए।

श्री गणेश जी ने कहा कि कृष्ण पक्ष की प्रत्येक चतुर्थी को जो लोग

लड्डू का भोग लगाकर मेरा पूजन करेंगे और विधि पूर्वक रोहिणी के साथ तुम्हारी पूजा करेंगे। जो लोग मेरी स्वर्ण प्रतिमा का पूजन करके कथा श्रवण करेंगे एवं ब्राह्मण भोजन करा कर उन्हें दान देंगे तो मैं सदैव उनके कष्टों का निवारण करता रहूँगा। यदि स्वर्ण प्रतिमा निर्मित कराने की क्षमता न हो तो मिट्टी की प्रतिमा का विविध सुगन्धित फूलों से मेरी पूजा करें, फिर प्रसन्न मन से ब्राह्मण को भोजन कराकर विधिपूर्वक पूजन के बाद कथा सुनकर वर्णित द्वारा ब्राह्मण को समर्पण करें कि हे देवदेव गणेश जी! आप हमारे इस दान से प्रसन्न होइए और सदैव सभी समय हे देव! आप हमारे कार्यों को निर्विघ्न पूरा करें। आप सम्मान, उन्नति, धन धान्य, पुत्र-पौत्रादि देते रहें। हमारे वंश में विद्वान, गुणी और आपके भक्त पुत्र उत्पन्न होते रहें। तदनन्तर ब्राह्मण को यथाशक्ति दान की दक्षिणा दें। नमकीन पदार्थों से विरहित होकर लड्डू, मालपूआ, खीर आदि मीठे

पदार्थों का ब्राह्मण को भोजन कराकर स्वयं इच्छानुसार भोजन करें तथा इस प्रकार व्रत रहकर पूजन करें तो मैं सदा विजय, कार्य में सिद्धि, धन-धान्य, विपुल सन्तति देता रहूँगा। इस प्रकार कह कर सिद्धिविनायक गणेश जी अन्तर्धान हो गये।

नारद जी ने कहा कि हे कृष्ण जी! आप भी इस व्रत को कीजिए। आपका कलंक छूट जाएगा। तब नारद जी के आदेशानुसार भगवान कृष्ण ने अनुष्ठान किया। इस व्रत के करने से श्रीकृष्ण कलंक से मुक्त हो गये।

नारद जी कहते हैं कि जो कोई आपके स्यमन्तक मणि के उपाख्यान को सुनेंगे, चन्द्रमा के चरित्र का कथानक सुनेंगे, उन्हें भाद्रशुक्ल चतुर्थी के चन्द्र दर्शन का दोष नहीं लगेगा। जब भी मानसिक संकट या किसी तरह का संशय उत्पन्न हो, चन्द्रमा का दर्शन भूल से हो जाय तो उसके

निमित्त इस कथा को सुनना चाहिए। ऐसा देवताओं ने वर्णन किया है कि कृष्ण जी ने गणेश जी की आराधना करके व्रत और पूजन से उन्हें प्रसन्न किया। अतः मनुष्यों को चाहिए कि इस क्लेशापहारक कथा को अवश्य ही सुनें। नर अथवा नारी पर किसी प्रकार का संकट आने पर इस व्रत के करने से उनके सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। विघ्नविनाशक गणेश जी की प्रसन्नता से मनुष्य को संसार में सभी पदार्थ सुलभ हो जाते हैं।

****

८. आश्विन कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा
श्रीकृष्ण तथा बाणासुर की कथा

युधिष्ठिर ने पूछा कि हे कृष्ण जी! मैंने सुना है कि आश्विन कृष्ण चतुर्थी को संकटा चतुर्थी कहते हैं। उस दिन किस भांति गणेश जी की पूजा करनी चाहिए? हे जगदीश्वर! आप कृपा करके मुझसे विस्तार पूर्वक कहिए।

श्रीकृष्ण जी ने उत्तर में कहा कि प्राचीन काल में यही प्रश्न पार्वती जी ने गणेश जी से किया था कि हे देव! क्वार मास में किस प्रकार गणेश जी की पूजा की जाती है? उसके करने का क्या फल होता है? मेरी जानने की इच्छा है यह सुनकर हँसते हुए—

गणेश जी ने कहा हे माता! सिद्धि की कामना रखने वाले व्यक्ति को

चाहिए कि आश्विन मास में कृष्ण नामक गणेश की पूजा पूर्वोक्त विधि से करें। इस दिन भोजन न करें तथा क्रोध, पाखण्ड, लोभ आदि का परित्याग कर गणेश जी के स्वरूप का ध्यान करते हुए पूजन करें। आश्विन कृष्ण चतुर्थी का व्रत संकटनाशक है। इस दिन हल्दी और दूब का हवन करने से सप्तद्वीप वाली पृथ्वी का राज हस्तगत (प्राप्त) होता है।

एक समय की बात है कि बाणासुर की कन्या उषा ने सुषुप्तावस्था में अनिरुद्ध का स्वप्न देखा, अनिरुद्ध के विरह से वह इतनी कामासक्त हो गई कि उसके चित्त को किसी भी प्रकार से शांति नहीं मिल रही थी। उसने अपनी सहेली चित्रलेखा से त्रिभुवन के सम्पूर्ण प्राणियों के चित्र बनवाए। जब चित्र में अनिरुद्ध को देखा तो कहा-मैंने इसी व्यक्ति को स्वप्न में देखा था। इसी के साथ मेरा पाणिग्रहण भी हुआ था। हे सुजघने! यह व्यक्ति जहाँ कहीं भी मिल सके, ढूँढ लाओ। अन्यथा

इसके वियोग में मैं अपने प्राण छोड़ दूँगी।

अपनी सखी की बात सुनकर चित्रलेखा अनेक स्थानों में खोज करती हुई द्वारकापुरी में आ पहुँची। वहाँ अनिरुद्ध को पहचान कर उसने उसका अपहरण कर लिया, क्योंकि वह राक्षसी माया जानने वाली थी। रात्रि में पलंग सहित अनिरुद्ध को उठाकर वह गोधूलि वेला में बाणासुर की नगरी में प्रविष्ट हुई। इधर प्रद्युम्न को पुत्र शोक के कारण असाध्य रोग से ग्रसित होना पड़ा। अपने पुत्र प्रद्युम्न एवं पौत्र अनिरुद्ध की घटना से कृष्ण जी भी विकल हो उठे। रुक्मिनी भी पौत्र के दुख से दुखी होकर बिलखने लगी पतिव्रता रुक्मिणी खिन्न मन से कृष्ण जी से कहने लगी कि हे नाथ! हमारे प्रिय पौत्र का किसने हरण कर लिया? अथवा वह अपनी इच्छा से ही कहीं गया है। मैं आपके सामने शोकाकुल हो अपने प्राण छोड़ दूँगी। रुक्मिणी की ऐसी बात सुनकर श्रीकृष्ण जी यादवों की सभा में उपस्थित

हुए। वहाँ उन्होंने परम तेजस्वी लोमश ऋषि के दर्शन किए। उन्हें प्रणाम कर श्रीकृष्ण ने सारी घटना कह सुनाई।

श्रीकृष्ण ने लोमश ऋषि से पूछा कि मुनिवर! हमारे पौत्र को कौन ले गया? वह कहीं स्वयं तो नहीं चला गया है? हमारे बुद्धिमान पौत्र का किसने अपहरण कर लिया, यह बात मैं नहीं जानता हूँ। उसकी माता पुत्र वियोग के कारण बहुत दुखी है। कृष्ण जी की बात सुनकर लोमश मुनि ने कहा—

महर्षि लोमश जी ने कहा कि हे कृष्ण! बाणासुर की कन्या उषा की सहेली चित्रलेखा ने आपके पौत्र का हरण किया है और उसे बाणासुर के महल में छिपाकर रखा है। यह बात नारद जी ने बताई है। आप आश्विन मास के कृष्ण चतुर्थी संकटा का अनुष्ठान कीजिये। इस व्रत के करने से आपका पौत्र अवश्य ही आ जायगा। ऐसा कहकर मुनिवर वन में चले

इसके वियोग में मैं अपने प्राण छोड़ दूँगी।

अपनी सखी की बात सुनकर चित्रलेखा अनेक स्थानों में खोज करती हुई द्वारकापुरी में आ पहुँची। वहाँ अनिरुद्ध को पहचान कर उसने उसका अपहरण कर लिया, क्योंकि वह राक्षसी माया जानने वाली थी। रात्रि में पलंग सहित अनिरुद्ध को उठाकर वह गोधूलि वेला में बाणासुर की नगरी में प्रविष्ट हुई। इधर प्रद्युम्न को पुत्र शोक के कारण असाध्य रोग से ग्रसित होना पड़ा। अपने पुत्र प्रद्युम्न एवं पौत्र अनिरुद्ध की घटना से कृष्ण जी भी विकल हो उठे। रुक्मिनी भी पौत्र के दुख से दुखी होकर बिलखने लगी पतिव्रता रुक्मिणी खिन्न मन से कृष्ण जी से कहने लगी कि हे नाथ! हमारे प्रिय पौत्र का किसने हरण कर लिया? अथवा वह अपनी इच्छा से ही कहीं गया है। मैं आपके सामने शोकाकुल हो अपने प्राण छोड़ दूँगी। रुक्मिणी की ऐसी बात सुनकर श्रीकृष्ण जी यादवों की सभा में उपस्थित

इसके वियोग में मैं अपने प्राण छोड़ दूँगी।

अपनी सखी की बात सुनकर चित्रलेखा अनेक स्थानों में खोज करती हुई द्वारकापुरी में आ पहुँची। वहाँ अनिरुद्ध को पहचान कर उसने उसका अपहरण कर लिया, क्योंकि वह राक्षसी माया जानने वाली थी। रात्रि में पलंग सहित अनिरुद्ध को उठाकर वह गोधूलि वेला में बाणासुर की नगरी में प्रविष्ट हुई। इधर प्रद्युम्न को पुत्र शोक के कारण असाध्य रोग से ग्रसित होना पड़ा। अपने पुत्र प्रद्युम्न एवं पौत्र अनिरुद्ध की घटना से कृष्ण जी भी विकल हो उठे। रुक्मिनी भी पौत्र के दुख से दुखी होकर बिलखने लगी पतिव्रता रुक्मिणी खिन्न मन से कृष्ण जी से कहने लगी कि हे नाथ! हमारे प्रिय पौत्र का किसने हरण कर लिया? अथवा वह अपनी इच्छा से ही कहीं गया है। मैं आपके सामने शोकाकुल हो अपने प्राण छोड़ दूँगी। रुक्मिणी की ऐसी बात सुनकर श्रीकृष्ण जी यादवों की सभा में उपस्थित

हुए। वहाँ उन्होंने परम तेजस्वी लोमश ऋषि के दर्शन किए। उन्हें प्रणाम कर श्रीकृष्ण ने सारी घटना कह सुनाई।

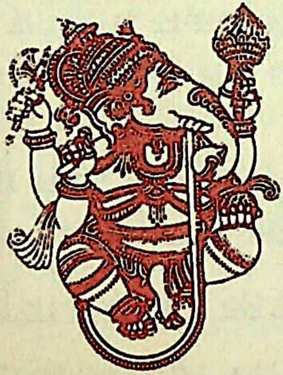
श्रीकृष्ण ने लोमश ऋषि से पूछा कि मुनिवर! हमारे पौत्र को कौन ले गया? वह कहीं स्वयं तो नहीं चला गया है? हमारे बुद्धिमान पौत्र का किसने अपहरण कर लिया, यह बात मैं नहीं जानता हूँ। उसकी माता पुत्र वियोग के कारण बहुत दुखी है। कृष्ण जी की बात सुनकर लोमश मुनि ने कहा—

महर्षि लोमश जी ने कहा कि हे कृष्ण! बाणासुर की कन्या उषा की सहेली चित्रलेखा ने आपके पौत्र का हरण किया है और उसे बाणासुर के महल में छिपाकर रखा है। यह बात नारद जी ने बताई है। आप आश्विन मास के कृष्ण चतुर्थी संकष्टा का अनुष्ठान कीजिये। इस व्रत के करने से आपका पौत्र अवश्य ही आ जाएगा। ऐसा कहकर मुनिवर वन में चले

गये। उन्होंने संकटा व्रत करने का उपदेश दिया। श्रीकृष्ण जी ने लोमश ऋषि के कथनानुसार व्रत किया। हे देवी! इस व्रत के प्रभाव से उन्होंने अपने शत्रु बाणासुर को पराजित कर दिया। यद्यपि उस भीषण युद्ध में मेरे पिता (शिवजी) ने बाणासुर की बड़ी रक्षा की फिर भी वह परास्त हो गया। भगवान कृष्ण ने कुपित होकर बाणासुर की सहस्त्र भुजाओं को काट डाला। ऐसी सफलता मिलने का कारण व्रत का प्रभाव ही था। श्री गणेश जी को प्रसन्न करने तथा सम्पूर्ण विघ्न को शमन करने के लिए इस व्रत के समान दूसरा कोई व्रत नहीं है। विश्व-भ्रमण तथा तीर्थ-भ्रमण के निमित्त इससे बढ़कर शुभदायक व्रत दूसरा नहीं है।

श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि हे राजन! सम्पूर्ण विपत्तियों के विनाशार्थ इस व्रत को अवश्य ही करना चाहिए। इसके प्रभाव से शत्रुओं पर आप विजय लाभ करेंगे एवं राज्याधिकारी होंगे। इस व्रत के महात्म्य का वर्णन

बड़े-बड़े विद्वान भी नहीं कर सकते। हे पृथा (कुन्ती) तनय! मैंने इसका स्वयं अनुभव किया है, यह मैं आपसे सत्य कह रहा हूँ।



कार्तिक कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा

१. दैत्यराज वृत्रासुर की कथा

पार्वती जी कहती हैं कि हे भाग्यशाली! लम्बोदर! भाषणकर्ताओं में श्रेष्ठ! कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को किस नाम वाले गणेश जी की पूजा किस भांति करनी चाहिए।

श्रीकृष्ण जी ने कहा कि अपनी माता की बात सुनकर गणेश जी ने कहा कि कार्तिक कृष्ण चतुर्थी का नाम संकटा है। उस दिन 'पिंग' नामक गणेश जी की पूजा करनी चाहिए। पूजन पूर्वोक्त रीति से करना उचित है। भोजन एक बार करना चाहिए। व्रत और पूजन के बाद ब्राह्मण भोजन कराकर स्वयं मौन होकर भोजन करना चाहिए। मैं इस व्रत का महात्म्य कह रहा हूँ, सावधानी पूर्वक श्रवण कीजिए। कार्तिक कृष्ण

संकट चतुर्थी को घी और उड़द मिलाकर हवन करना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य को सर्वसिद्धि प्राप्त होती है।

श्रीकृष्ण जी ने कहा कि वृत्रासुर दैत्य ने त्रिभुवन को जीत करके सम्पूर्ण देवों को परतंत्र कर दिया। उसने देवताओं को उनके लोकों से निष्कासित कर दिया। परिणामस्वरूप देवता लोग दशों दिशाओं में भाग गए। तब सभी देव इन्द्र के नेतृत्व में भगवान विष्णु के शरणागत हुए। देवों की बात सुनकर विष्णु ने कहा कि समुद्री द्वीप में बसने के कारण वे निरापद होकर उच्छृंखल एवं बलशाली हो गए हैं। पितामह ब्रह्मा जी से किसी देवों के द्वारा न मरने का उन्होंने वर प्राप्त कर लिया है। अतः आप लोग अगस्त्य मुनि को प्रसन्न करें। वे मुनि समुद्र को पी जायेंगे। तब दैत्य लोग अपने पिता के पास चले जायेंगे। आप लोग सुख पूर्वक स्वर्ग में निवास करने लगेंगे। अतः आप लोगों का कार्य अगस्त्य मुनि की सहायता से पूरा

होगा। ऐसा सुनकर सब देवगण अगस्त्य मुनि के आश्रम में गये और स्तुति द्वारा उन्हें प्रसन्न किया। मुनि ने प्रसन्न होकर कहा कि हे देवताओं! डरने की कोई बात नहीं है, आप लोगों का मनोरथ निश्चय ही पूरा होगा। मुनि की बात से सब देवता अपने-अपने लोक को चले गये। इधर मुनि को चिन्ता हुई कि एक लाख योजन इस विशाल समुद्र को मैं कैसे पान कर (पी) सकूंगा? तब गणेश जी का स्मरण करके संकट चतुर्थी के उत्तम व्रत को विधिपूर्वक सम्पन्न किया। तीन महीने तक व्रत करने के बाद उन पर गणेश जी प्रसन्न हुए। उसी व्रत के प्रभाव से अगस्त्य जी ने समुद्र को सहज ही पान करके सुखा डाला। यह उसी व्रत का प्रभाव था कि अर्जुन ने निवात-कवच आदि सम्पूर्ण दैत्यों को पराजित कर दिया। गणेश जी की इस बात से पार्वती जी अत्यन्त प्रसन्न हुईं कि मेरा पुत्र विश्ववंद्य और सर्व-सिद्धियों का प्रदाता है। कृष्ण जी कहते हैं कि हे महाराज युधिष्ठिर!

आप भी चतुर्थी का व्रत कीजिए। इसके करने से आप शीघ्र ही सब शत्रुओं को जीतकर अपना राज्य पा जायेंगे। श्रीकृष्ण के आदेशानुसार युधिष्ठिर ने गणेश जी का व्रत किया। व्रत के प्रभाव से उन्होंने शत्रुओं को जीतकर अखंड राज्य प्राप्त कर लिया। केवल कथा-श्रवण करने से ही हजारों अश्वमेध और सैकड़ों वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है साथ ही पुत्र, पौत्रादि की वृद्धि भी होती है।

****

मार्गशीर्ष कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा

१०. महाराज दशरथ की कथा

पार्वती जी ने गणेश जी से पूछा कि अगहन कृष्ण चतुर्थी संकटा कहलाती है, उस दिन किस गणेश की पूजा किस रीति से करनी चाहिए?

गणेश जी ने उत्तर दिया कि हे हिमालयनन्दिनी! अगहन में पूर्वोक्त रीति से गजानन नामक गणेश की पूजा करनी चाहिए। पूजन के बाद अर्घ्य देना चाहिए। दिन भर व्रत रहकर पूजन के बाद ब्राह्मण को भोजन कराकर जौ, तिल, चावल, चीनी और घृत का शाकला बनाकर हवन करावें तो वह अपने शत्रु को वशीभूत कर सकता है। इस सम्बन्ध में हम तुम्हें एक प्राचीन इतिहास सुनाते हैं।

प्राचीन काल में त्रेतायुग में दशरथ नामक एक प्रतापी राजा हो चुके

हैं। वे राजा आखेट-प्रिय थे। एक बार अनजाने में ही उन्होंने एक श्रवणकुमार नामक ब्राह्मण का आखेट (शिकार करने) में वध कर दिया। उस ब्राह्मण के अंधे माँ-बाप ने राजा को शाप दिया कि जिस प्रकार हम लोग पुत्रशोक में मर रहे हैं, उसी भाँति तुम्हारा भी पुत्रशोक में मरण होगा। इससे राजा को बहुत चिन्ता हुई। उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। फलस्वरूप जगदीश्वर राम ने चतुर्भुज रूप से अवतार लिया। भगवती लक्ष्मी जानकी के रूप में अवतरित हुईं। पिता की आज्ञा पाकर भगवान राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ वन में खरदूषणादि राक्षसों का वध किया। इससे क्रोधित होकर लोगों को रुलाने वाले रावण ने सीताजी का अपहरण कर लिया। सीता जी के वियोग में भगवान रामचन्द्र जी ने पंचवटी का त्याग कर दिया और ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचकर सुग्रीव के साथ मैत्री की। तत्पश्चात् सीता जी की खोज में

हनुमान आदि वानर तत्पर हुए। ढूँढते-ढूँढते वानरों ने गिद्धराज सम्पाती को देखा। इन वानरों को देखकर संपाती ने पूछा कि तुम लोग कौन हो? इस वन में कैसे आये हो? तुम्हें किसने भेजा है? यहां पर तुम्हारा आना किस प्रकार हुआ है। संपाती की बात सुनकर वानरों ने उत्तर दिया कि भगवान विष्णु के अवतार दशरथ नन्दन रामजी, सीता और लक्ष्मण जी के साथ दण्डकवन में आये हैं। वहाँ पर उनकी पत्नी सीताजी का अपहरण कर लिया गया है। हे मित्र! इस बात को हम लोग नहीं जानते हैं कि सीता कहाँ हैं? उनकी बात सुनकर संपाती ने कहा कि तुम सब रामचन्द्र के सेवक होने के नाते हमारे मित्र हो। जानकी जी का जिसने हरण किया है और वह जिस स्थान पर है वह मुझे मालूम है। सीता जी के लिए मेरा छोटा भाई जटायु अपने प्राण गँवा चुका है। श्रीरामचन्द्र जी के चरण कमल का स्मरण कर हमारे भाई ने अपना शरीर त्यागा है। यहाँ से थोड़ी

ही दूर पर समुद्र है और समुद्र के उस पार राक्षस नगरी है। वहां शीशम के पेड़ के नीचे सीता जी बैठी हुई हैं, आप लोग देखिए। रावण द्वारा अपहृत सीता जी अभी भी मुझे दिखाई दे रही हैं। मैं आपसे सत्य कह रहा हूँ कि सभी वानरों में हनुमान जी अत्यन्त पराक्रमशाली हैं। अत: उन्हें वहाँ जाना चाहिए। केवल हनुमान जी ही अपने पराक्रम से समुद्र लांघ सकते हैं। अन्य कोई भी इस कार्य में समर्थ नहीं है। संपाती की बात सुनकर हनुमान जी ने पूछा कि हे संपाती! दुस्तर समुद्र को मैं किस प्रकार पार कर सकता हूँ? हमारे सब वानर उस पार जाने में असमर्थ हैं तो मैं ही अकेला कैसे पार जा सकता हूँ?

हनुमान जी की बात सुनकर संपाती ने उत्तर दिया कि हे मित्र! आप संकटनाशक गणेश चतुर्थी का व्रत कीजिए। उस व्रत के प्रभाव से आप समुद्र को क्षणमात्र में पार कर लेंगे। संपाती के आदेश से संकट चतुर्थी

के उत्तम व्रत को हनुमान जी ने किया। हे देवी! इसके प्रभाव से क्षणभर में समुद्र को लांघ गये। इस लोक में इसके समान सुखदायक दूसरा कोई व्रत नहीं है।

श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि महाराज युधिष्ठिर! आप भी इस व्रत को कीजिए। इस व्रत के प्रभाव से आप क्षणभर में अपने शत्रुओं को जीतकर सम्पूर्ण राज्य के अधिकारी बनेंगे। भगवान कृष्ण का वचन सुनकर युधिष्ठिर ने गणेश चतुर्थी का व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से वे अपने शत्रुओं को जीतकर राज्य के अधिकारी बन गये।

****

११. पौष कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा राक्षसराज रावण की कथा

पार्वती जी ने पूछा-हे पुत्र! पौष में किस गणेश की पूजा किस तरह से करनी चाहिए और उस दिन क्या भोजन करना चाहिए? उसे आप संक्षेप में बतलाइए।

श्री गणेज जी ने कहा-हे महादेवी! पौष मास की चतुर्थी विघ्नविनाशिनी होती है। उसमें लम्बोदर नामक गणेश की पूजा करके भोजन के रूप में केवल गोमूत्र ही पीना चाहिए। व्रती को पूर्वोक्त विधि से पूजन करना चाहिए अर्थात् दिन भर शान्त भाव से निराहार रहकर व्रत करें, दिन में न सोयें, ब्रह्मचर्य का पालन करें। रात्रि में पूजन के बाद ब्राह्मण भोजन करावें। दुग्धनिर्मित खीर में शुद्ध घी मिलाकर गणपति मंत्र से हवन करें

तो वह शासक को भी अपने वशीभूत कर सकता है। इस सम्बन्ध में हम आपको एक प्राचीन कथा सुनाते हैं।

एक बार रावण ने सभी देवताओं को जीतकर मदान्ध हो संध्या कर रहे बालि को पीछे से जाकर पकड़ लिया। बलशाली बालि रावण को अपनी काँख में दबाये हुए आकाशमार्ग द्वारा किष्किन्धापुरी में आया और उस बन्दी रावण को अपने पुत्र अंगद के लिए खिलौने के रूप में दे दिया। रावण के गले में रस्सी बांधकर अंगद ने उसे नगर में घुमाना शुरू कर दिया। विश्वविजयी रावण की ऐसी हालत देखकर सभी नगरवासियों ने अट्टहास किया। जनता कहने लगी-अरे देखो तो सही, यह विश्वविजेता रावण आज राजकुमार द्वारा सड़कों पर घुमाया जा रहा है। पुरवासियों की बात से रावण बहुत ही लज्जित होकर उसासें लेने लगा। उसका दर्प चूर हो गया। उसने अपने नाना पुलस्त्य मुनि का स्मरण किया। अपने

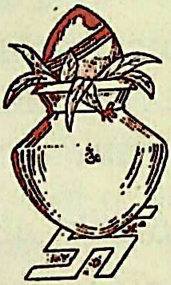
नाती की दीन पुकार से मुनि को आश्चर्य हुआ कि उसके नाती की ऐसी दशा क्यों कर हुई। अत्यन्त गर्व करने से देव, दानव, मनुष्य आदि सभी का पतन अवश्यम्भावी होता है। रावण के समीप आकर मुनि ने पूछा कि तुमने मुझे क्यों याद किया है?

रावण ने कहा-हे नाना जी! देवताओं को जीतने के कारण गर्व करने से मेरी यह दुर्गति हुई है। मैंने संध्या करते हुए एक वानरराज को देखा। पश्चिमी महासागर के तट पर मैंने उसे पीछे से पकड़ने की चेष्टा की। परन्तु मैं ही उसके द्वारा पकड़ लिया गया। मुझे उसने यहाँ लाकर गले में रस्सी बाँधकर अपने लड़के को खेलने के लिये दे दिया। इस दुर्गति को देखकर नगरवासी मेरी हँसी उड़ाते हैं। हे देव! इसी चिन्ता में मैं व्याकुल रहता हूँ। रस्सी में बंधे रहने के कारण मैं अशक्त हो गया हूँ। हे नाथ! अब मैं क्या करूँ? मेरे जैसा आपके वंश में कोई दूसरा कुलकलंकी नहीं

है। अब आप ही मेरी रक्षा कर सकते हैं।

पुलस्त्य जी ने कहा-हे रावण! डरने की कोई बात नहीं है। मैं तुम्हें बन्धनमुक्त करा दूँगा। यह बालि देवराज इन्द्र के वीर्य से उत्पन्न है और पराक्रम में तुमसे बढ़कर है। इसकी मृत्यु महाराज दशरथ के पुत्र श्रीराम के हाथों होगी। हे राक्षसराज! यदि तुम बालि के बन्धन से छूटना चाहते हो तो मेरी बात मानकर संकटनाशक गणेश जी का व्रत करो। प्राचीन काल में वृत्रासुर की हत्या के प्रायश्चितस्वरूप इन्द्र ने इस व्रत को किया था। अतः तुम भी इस संकटनाशक व्रत को करो। बहुत शीघ्र ही तुम्हारा क्लेश दूर होगा। इस प्रकार आदेश देकर ब्रह्मर्षि वन में चले गये और इधर रावण ने व्रत का अनुष्ठान किया। हे देवी! इस व्रत के प्रभाव से रावण तत्काल ही बन्धन रहित हो गया और सुखपूर्वक अपना राज्य करने लगा। भगवान कृष्ण कहते हैं कि हे युधिष्ठिर! आप भी इस व्रत को

कीजिए। इस व्रत के प्रभाव से समर में समस्त शत्रुओं का संहार करके आप अपने उत्तम राज्य को प्राप्त करेंगे। कृष्ण जी की बात सुनकर युधिष्ठिर ने विधि पूर्वक पौष कृष्ण चतुर्थी व्रत किया और इस व्रत के प्रभाव से उन्होंने अपने राज्य को पुनः प्राप्त कर लिया।



१२. माघ कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा
ऋषिशर्मा ब्राह्मण की कथा

पार्वती जी ने पूछा कि हे वत्स! माघ महीने में किस गणेश की पूजा करनी चाहिए तथा इसका क्या नाम है? उस दिन पूजन में किस वस्तु का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए? और क्या आहार ग्रहण करना चाहिए। इसे आप सविस्तार बतलाने की कृपा करें।

गणेश जी ने कहा कि हे माता! माघ में 'भालचन्द्र' नामक गणेश की पूजा करनी चाहिए। इनका पूजन षोडशोपचार विधि से करना चाहिए। हे माता पार्वती! इस दिन तिल के दस लड्डू बना लें। पांच लड्डू देवता को चढ़ावें और शेष पांच ब्राह्मण को दान दे देवें। ब्राह्मण की पूजा भक्तिपूर्वक करके, उन्हें दक्षिणा देने के बाद उन पांच लड्डुओं को उन्हें

प्रदान कर दें। हे देवी! तिल के दस लड्डुओं का स्वयं आहार करें। इस सम्बन्ध में मैं आप को राजा हरिश्चन्द्र का वृतान्त सुनाता हूँ।

सतयुग में हरिश्चन्द्र नामक एक प्रतापी राजा हुए थे। वे क्षात्र धर्म में पटु सरल स्वभाव, सत्यनिष्ठ और विद्वान ब्राह्मणों के पूजक थे। हे देवी! उनके शासन काल में अधर्म नाम की कोई वस्तु नहीं थी। उनके राज्य में कोई अपाहिज, दरिद्र या दुःखी नहीं था। सभी लोग आधि व्याधि से रहित एवं दीर्घायु होते थे। उन्हीं के राज्य में एक ऋषिशर्मा नामक तपस्वी ब्राह्मण रहते थे। एक पुत्र की प्राप्ति होने के बाद ही वे स्वर्गवासी हुए। पुत्र का भरण-पोषण उनकी पत्नी करने लगी। वह विधवा ब्राह्मणी भिक्षाटन के द्वारा पुत्र का पालन-पोषण करती थी। उस ब्राह्मणी ने माघ मास की संकटा चतुर्थी का व्रत किया।

वह पतिव्रता ब्राह्मणी गोबर से गणेश जी की प्रतिमा बनाकर सदैव

पूजन किया करती थी। हे पार्वती! भिक्षाटन के द्वारा ही उसने पूर्वोक्त रीति से तिल के दस लड्डू बनाये। इसी बीच उसका पुत्र गणेश जी की मूर्ति अपने गले में बांधकर स्वेच्छा से खेलने के लिए बाहर चला गया। तब एक नर पिशाच कुम्हार ने उस ब्राह्मणी के पांच वर्षीय बालक को जबरन पकड़कर अपने आंवाँ में छोड़कर मिट्टी के बर्तनों को पकाने के लिए उसमें आग लगा दी। इधर उसकी माता अपने बच्चों को ढूँढने लगी। उसे न पाकर वह बड़ी व्याकुल हुई। वह ब्राह्मणी विलाप करती हुई गणेश जी की प्रार्थना करने लगी। हे गणेश जी! विशाल शरीर वाले! हे सूर्यनारायण की लाली के सदृश कान्तिशाली! हे सुन्दर जटा समूह को धारण करने वाले! आप इस दुःखिनी की रक्षा कीजिए। हे गजानन! हे चार भुजाधारी! हे मस्तक में चन्द्रमा को धारण करने वाले! हे विनायक! हे अनाथों के नाथ! हे वरदायक! मैं पुत्र के वियोग में व्यथित हूँ। आप

मेरी रक्षा कीजिए। वह ब्राह्मणी इसी प्रकार आधी रात तक विलाप करती रही। प्रातःकाल होने पर कुम्हार अपने पके हुए बर्तनों को देखने के लिए आया जब उसने आंवां खोल के देखा तो उसमें जांघ भर पानी जमा हुआ पाया और इससे भी अधिक आश्चर्य उसे जब हुआ कि उसमें बैठे एक खेलते हुए बालक को देखा। ऐसी अद्‌भुत घटना देखकर वह भयवश कांपने लगा और इस बात की सूचना उसने राज दरबार में दी। उसने राज्य सभा में अपने कुकृत्य का वर्णन किया।

कुम्हार ने कहा कि हे महाबाहु! हे प्रज्जवलित अग्नि के समान तेजवान! हे महाराज हरिश्चन्द्र! मैं अपने दुष्कर्म के लिए वध के योग्य हूँ।

उसने आगे कहा-हे महाराज! कन्या के विवाह के लिए मैंने कई बार मिट्टी के बर्तन पकाने के लिए आंवां लगाया। परन्तु मेरे बर्तन कभी भी नहीं पके और सदैव कच्चे ही रह गये। तब मैंने भयभीत होकर एक

तांत्रिक से इसका कारण पूछा। उसने कहा कि चुपचाप किसी लड़के की तुम बलि चढ़ा दो, तुम्हारा आंवां पक जायेगा। मैंने सोचा कि मैं किसके बालक की बलि दूँ? जिसके बालक की बलि दूंगा वह मुझे क्योंकर जीवित छोड़ेगा? इसी भय से हे महाराज! मैंने दृढ़ निश्चय किया कि इसे ही बैठाकरं आग लगा दूंगा। मैंने अपनी पत्नी से परामर्श किया कि ऋषिशर्मा ब्राह्मण मृत हो गये हैं। उनकी विधवा पत्नी भीख माँगकर अपना गुजारा करती है। अरी! वह लड़के को लेकर क्या करेगी? मैं यदि उसके पुत्र को बलि दे दूं तो मेरे बर्तन पक जायेंगे। मैं इस जघन्य कर्म को करके रात में निश्चिन्त होकर सो गया। प्रातः जब मैंने आंवां खोलकर देखा तो क्या देखता हूँ कि उस लड़के को मैं जिस स्थिति में बैठा गया था, वह उसी तरह निर्भय भाव से बैठा है और उसमें जाँघ भर पारी भरा हुआ है। इस भयावह दृश्य से मैं कांप उठा और इसकी सूचना

देने आपके पास आया हूँ।

कुम्हार की बात सुनकर राजा बहुत ही विस्मित हुए और उस लड़के को देखने के लिए आए। बालक को प्रसन्नता पूर्वक खेलते देखकर मंत्री से राजा ने कहा कि यह क्या बात है? यह किसका लड़का है? इस बात का पता लगाओ। इस आंवे में जांघ भर जल कहां से आया? इसमें कमल के फूल कहां से खिल गये? इस दरिद्र कुम्हार के आंवे में वैदूर्य मणि के समान हरी-हरी दूब कहां से उग आई। बालक को न तो आग की जलन हुई न तो इसे भूख प्यास ही है। यह आंवे में भी वैसा ही खेल रहा है, मानो अपने घर में खेल रहा हो। राजा इस तरह की बात कह ही रहे थे कि वह ब्राह्मणी वहां बिलखती हुई आ पहुँची। वह कुम्हार को कोसने लगी। जिस प्रकार गाय अपने बछड़े को देखकर रंभाती है, ठीक वही अवस्था उस बुढ़िया की थी। वह बुढ़िया बालक को गोद में लेकर प्यार

करने लगी और कांपती हुई राजा के सामने बैठ गई।

राजा हरिश्चन्द्र ने पूछा कि हे ब्राह्मणी! इस बालक के न जलने का क्या कारण है? क्या तू कोई जादू जानती है अथवा तूने कोई धर्माचरण किया है। जिसके कारण बच्चे को आंच तक न आई?

राजा की बात सुनकर ब्राह्मणी ने कहा कि हे महाराज! मैं कोई जादू नहीं जानती और न तो कोई धर्माचरण, तपस्या, योग, दान आदि की प्रक्रिया ही जानती हूँ। हे राजन! मैं तो संकटनाशक गणेश चतुर्थी का व्रत करती हूँ। उसी व्रत के प्रभाव से मेरा पुत्र जीता-जागता बच गया। ब्राह्मणी की बात सुनकर राजा ने कहा कि मेरे राज्य की सम्पूर्ण जनता इस संकटनाशक गणेश चतुर्थी का व्रत करे, इसमें मेरी पूर्ण सम्मति है। राजा ने उसकी परिक्रमा करते हुए कहा कि हे पतिव्रते! तू धन्य है। राजा ने सम्पूर्ण नगरवासियों को गणेश जी का व्रत करने का आदेश दिया। इस

आश्चर्यजनक घटना के कारण सभी लोग उस दिन से प्रत्येक मास की गणेश चतुर्थी का व्रत करने लगे। इस व्रत के प्रभाव से ब्राह्मणी ने अपने पुत्र के जीवन को पुनः पाया था।

इतना कहने के बाद श्रीकृष्ण ने कहा कि हे युधिष्ठिर! आप भी सर्वोत्तम व्रत को कीजिए। इस व्रत के प्रभाव से आपकी सभी कामनाएँ पूर्ण होंगी। आप मित्रों, पुत्रों और पौत्रों को सुख देने वाले साम्राज्य को प्राप्त करेंगे। हे महाराज! जो लोग इस व्रत को करेंगे उन्हें पूर्ण सफलता मिलेगी। भगवान कृष्ण की बात से युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न हुए और माघ कृष्ण गणेश चतुर्थी का व्रत करके निष्कण्टक राज्य भोगने लगे।

****

१३. फाल्गुन कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा
विष्णुशर्मा नामक ब्राह्मण की कथा

पार्वती जी पूछती हैं कि हे गजानन! फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी को गणेश जी की पूजा कैसे करनी चाहिए? इस महीने में किस नाम से पूजन होता है और आहार में क्या ग्रहण करना चाहिए?

गणेश जी ने कहा कि, हे माता! फाल्गुन चतुर्थी को 'हेरम्ब' नाम से गणेश जी की पूजा करनी चाहिए। पूजा का विधान पूर्वोक्त रूप से है इस दिन खीर में कनेर के फूल मिलाकर गुलाबांस की लकड़ी से हवन करना चाहिए। विद्वानों का मत है कि आहार में घी और चीनी लें। इससे सम्बन्धित एक पूर्व कालिका इतिहास सुनाता हूँ। युधिष्ठिर के प्रश्न के उत्तर में जैसा श्री कृष्ण जी ने कहा था, उसे मैं सुनाता हूँ।

श्रीकृष्ण जी ने कहा कि प्राचीन काल में युवनाश्व नामक एक राजा हुए थे। वे धर्मात्मा, उदार, दाता, देवताओं एवं ब्राह्मणों का पूजक था। उस राजा के राज्य में विष्णुशर्मा नामक एक तपस्वी ब्राह्मण रहते थे। वे वेदवेत्ता एवं धर्मशास्त्रज्ञ थे। उनके सात पुत्र हुए, जो सभी धनधान्य से समृद्ध थे। परन्तु पारस्परिक कलह के कारण सब अलग होकर रहने लगे। विष्णुशर्मा प्रत्येक पुत्र के घर में क्रमशः एक-एक दिन भोजन करते थे। बहुत दिन बीतने के बाद वे बूढ़े होकर कमजोर हो गये। वृद्धता के कारण उनकी सभी बहुएँ अनादर करने लगीं। वे तिरस्कृत होकर रोते रहते थे। एक समय की बात है कि विष्णुशर्मा गणेश चतुर्थी व्रत रहकर अपनी बड़ी पुत्रवधू के घर गये।

उस ब्राह्मण ने कहा कि हे बहूरानी! आज गणेश जी का व्रत है। तुम पूजन की सामग्री जुटा दो। गणेश जी प्रसन्न होकर प्रचुर धन देंगे।

पोंछा। वह शोक करने लगी कि मुझे हतभागिनी के कारण आपकी ऐसी दशा क्यों हुई? हे दादाजी! रात को अब मैं कहाँ जाऊँ? मुझे आप कोई उपाय बतलाइये। रात-भर विलाप करते रहने के कारण अनजाने में उसका जागरण भी हो गया और फिर सुबह हुआ। छोटी बहू क्या देखती है कि उसके घर में हीरा, मोती और मणियों का ढेर पड़ा है। जिससे घर प्रकाशित हो रहा था। अब उसके ससुर का कै-दस्त भी बन्द हो चुका था। आश्चर्य में पड़कर वह अपने ससुर से पूछने लगी-यह क्या बात है? यह सम्पत्ति किसकी है? अरे! इतना मणि-मूंगा आदि मेरे घर कहाँ से आ गये? हे दादाजी! क्या कोई हम लोगों को चोरी में फंसाने के उद्देश्य से तो घर में नहीं डाल गया है? पतोहू की बात सुनकर ब्राह्मण कहने लगा कि कल्याणी! यह सब तुम्हारी श्रद्धा का फल है। तुम्हारी भक्ति से गणेश जी तुम पर प्रसन्न हो गये हैं। इस व्रत के प्रभाव से ही गणेश जी ने तुम्हें

इतनी सम्पत्ति दी है। बहू कहने लगी कि हे दादाजी! आप धन्य हैं, आपकी कृपा से ही गणेश जी प्रसन्न हुए हैं। मेरी दरिद्रता दूर हुई, घर में अतुल सम्पत्ति आयी और आपकी कृपा से भी धन्य हुई। इस प्रकार वह ससुर से बार-बार कहने लगी। अब छोटी बहू के घर में अपार सम्पत्ति देखकर अन्य सभी बहुओं के क्रोध की सीमा न रही। उन्होंने कहा कि बूढ़े ने अपने सम्पूर्ण संचित धन को दे डाला है। बन्धुओं के पारस्परिक कलह को देखकर विष्णुशर्मा डरकर कहने लगे कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। केवल इस व्रत के प्रभाव से गणेश जी ने प्रसन्न होकर छोटी बहू को दिया है। गणेश जी ने कुबेर जैसी सम्पत्ति प्रदान की है। हे बहुओं! मैंने पहले तुम्हारे घर जाकर व्रतानुष्ठान का अनुरोध किया था। परन्तु तुम लोगों ने मुझे दुत्कार दिया। छोटी बहू ने भिक्षा मांगकर पूजन सामग्री जुटाई। इसके करने से गणेश जी ने प्रसन्न होकर सम्पत्ति प्रदान की है।

गणेश जी कहते हैं कि हे गिरिराजकुमारी! उस ब्राह्मण के छहों पुत्र दरिद्र, रोगी और दुःखी हो गये। केवल छोटा पुत्र ही इन्द्र के समान भाग्यशाली बन बैठा। वे छहों आपस में होड़ करते हुए फाल्गुन कृष्ण गणेश चतुर्थी व्रत करने लगे। इस व्रत के करने से वह सब भी क्रमशः धनवान् बनते गये। इसी प्रकार दूसरे लोग भी जो इस व्रत को करेंगे उनका घर भी धन-धान्य से भरा पूरा रहेगा। श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि हे पुरुषोत्तम युधिष्ठिर! गणेश चतुर्थी व्रत के प्रभाव से राज्य की कामना वाले को राज्य की प्राप्ति होती है। इसलिए हे राजन! आप भी इस व्रत को शीघ्र ही कीजिए। फलस्वरूप आप कष्टों से छूटकर राज्य का सुखोपभोग करने लगेंगे। श्रीकृष्ण जी के मुख से इस कथा को सुनकर युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न हुए और व्रत करके गणेश जी की कृपा से अखण्ड राज्य के अधिकारी हुए।

****

१४. अधिकमास कृष्ण-गणेश चतुर्थी व्रत कथा
चन्द्रसेन नामक राजा की कथा

स्कन्द कुमार कहते हैं कि समस्त ऋषियों! आप लोग पुराण में वर्णित मंगलदायिनी कथा को सुनिये—जिसमें गणेश जी के व्रत के महात्म्य का जिस प्रकार वर्णन किया गया है। हे द्विजवरो! जिस समय पाण्डुपुत्रों को बनवास हुआ, वे सब धर्म परायण और कृष्ण की उपासना करते थे। एक समय की बात है कि अपनी इच्छा से भ्रमण करते हुए व्यासजी उन लोगों की कुटिया पर आये। व्यास मुनि को देखकर सभी करबद्ध हो, उनके सम्मुख खड़े हो गये और कहने लगे-आपके दर्शन कर हम लोग धन्य हुए, साथ ही हमारी कुटिया भी। आपके पदार्पण से हमारा जीवन आज धन्य हुआ, आज हम लोगों का सब कुछ सफल हुआ, क्योंकि आपका दर्शन

सम्पूर्ण कष्टों का निवारक है। आपने मेरी कुटिया में पदार्पण किया है। अतः हम लोग आपका स्वागत करते हैं। हम लोग राज्यच्युत होकर भी आज अपने को धन्य मान रहे हैं। ऐसा कहकर पांचों पांडव—भीमसेन, युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल और सहदेव उन्हें प्रणाम कर उनके सामने खड़े हो गये। पाद्य, अर्घ्य, आचमन और आसन प्रदान कर द्रोपदी ने हाथ जोड़कर उनसे कहना प्रारम्भ किया। हे मुनिवर! मैं राजरानी होकर भी दुर्योधन की भरी सभा में केश पकड़कर अपमानित हुई और वनवासिनी बनाई गयी। अब मैं क्या उपाय करूं? जिससे हमारे सभी क्लेशों का शमन हो तथा हमारे शत्रुओं की पराजय हो। इस प्रकार युधिष्ठिर, द्रोपदी के संकटनाशक उपाय पूछने पर सर्वज्ञ व्यासजी ने कृपापूर्वक उन्हें उपाय बतलाया। हे महाराज! इस समय सम्पूर्ण विश्व में आपके जैसा कोई दूसरा धर्मात्मा नहीं है। मैं आपसे ऐसे व्रत का वर्णन करूंगा जिससे

आपके समस्त दुःखों और कष्टों का निवारण होगा। वह व्रत शुभदायक, फलदायक, दिव्य और पृथ्वी पर सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला है। इस व्रत के करने से विद्यार्थियों को विद्या और धनार्थी को धन लाभ होता है। इस सम्बन्ध में एक प्राचीन उपाख्यान का वर्णन करता हूँ। हे युधिष्ठिर! आप सुनिए।

प्राचीन काल में सतयुग में चन्द्रसेन नामक एक राजा हुए। वे अपनी रानी के साथ दीक्षा लेकर परिवार के सहित रहते थे। वे अपने स्वजनों, उनके पुत्रों एवं कुटुम्बियों के साथ आनन्दपूर्वक निवास करते थे। सौभाग्य से उनकी रानी बहुत ही गुणवती तथा पतिव्रता थी। हे राजन युधिष्ठिर! उनका नाम रत्नावली था। वह पतिव्रत का पालन करने वाली थीं। स्कन्द कुमार जी कहते हैं कि हे मुनियों! राजा और रानी में परस्पर प्रगाढ़ प्रेम था। एक समय दैवयोग से शत्रुओं ने उनके राज्य को हस्तगत

कर लिया। शत्रुओं ने राजा के कोष पर अधिकार करने के साथ ही सेना पर भी आधिपत्य जमा लिया। राजा का साथ अपने भाई बन्धुओं से छूट गया। राज्य भ्रष्ट होकर राजा अपनी रानी रत्नावली के साथ वन में चले गये। एक ही वस्त्र में लिपटे वे दम्पत्ति भूख-प्यास से विकल हो गये। हे युधिष्ठिर! रानी रत्नावली के साथ राजा अकेले वन में भटकने लगे। क्षुधा पिपासा से पीड़ित होकर वन में चलते-चलते उन दोनों को सूर्यास्त हो गया। उस भयंकर वन में शेर, बाघ, चकवा, बगुला, कोयल और सारस रहते थे। रानी के पैर में कांटा चुभ जाने से राजा को महान कष्ट का अनुभव हुआ। उस वन में घूमते हुए राजा ने प्रातःकाल महर्षि मार्कण्डेय को दूर से ही देखा। धीरे-धीरे चलकर वहां तक पहुँचे और उन्हें दण्डवत किया। उनकी पत्नी ने श्री मुनि को बारम्बार प्रणाम किया। वन में विराजमान तपस्वी एवं जितेन्द्रिय मुनि मार्कण्डेय जी से हाथ जोड़कर

राजा ने कहा।

राजा ने पूछा कि हे पूज्यवर! मैंने पूर्व जन्म में ऐसा कौन-सा पाप किया था जिससे मेरी राज्यलक्ष्मी शत्रुओं द्वारा छीन ली गई?

मार्कण्डेय मुनि ने उत्तर दिया कि हे राजन! आप अपने पूर्वजन्म के वृतान्त को सुनिये, मैं बतला रहा हूँ।

एक बार आखेट (शिकार) के लिए आप गहन वन में चले गए। हरिण, चीते और खरगोश का शिकार करते-करते उस वन में रात हो गई और अधिक मास की चतुर्थी आ गई। उस वन में आपने एक सुन्दर सरोवर देखा और उसके किनारे लाल रंग की साड़ी पहने हुए नाग कन्याओं को देखा। वे सब गणेश जी की पूजा कर रही थीं। यह देखकर आपको बड़ा आश्चर्य हुआ आपने वहां पहुँचकर बडी नम्रतापूर्वक पूछा कि हे स्वर्गगामिनी देवियों? गणेश जी की पूजा कैसे करनी चाहिए, मुझे

का अभाव न रहा। परन्तु कुछ दिनों के बाद आप धनगर्वित होकर व्रत करना भूल गए। इसके अनन्तर आप उस जन्म में मृत्यु को प्राप्त हुये। हे राजन! उस जन्म में जो पूजन किया था उसके प्रभाव से आपका जन्म राजवंश में हुआ और सहृदय की मित्रता, सुन्दर नारी का समागम एवं सुन्दर शरीर की प्राप्ति होने से धनमद में आकर आपने व्रत करना छोड़ दिया जिसके कारण आपकी ऐसी दुर्गति हुई है।

राजा ने पूछा कि हे ब्राह्मण! अब मैं कौन-सा काम करूँ जिससे वर्तमान संकट से मुक्ति हो? जिस उपाय से हमारे विघ्नों और क्लेशों का नाश हो तथा मुझे शांति प्राप्त हो, वही बताइये।

मार्कण्डेय मुनि ने कहा कि हे महाराज! पूर्वोक्त रीति से आप गणेश जी की पूजा कीजिए और संकटनाशन चतुर्थी के व्रत को कीजिए। इससे गणेश जी प्रसन्न होंगे और आपको पुनः राज्य वैभव प्राप्त होगा।

इसलिए सम्पूर्ण कष्टों के शमनार्थ आप स्वयं गणेश जी की पूजा कीजिए।

व्यासजी कहते हैं कि मार्कण्डेय जी की बात सुनकर राजा ने उन्हें प्रणाम किया और अपने भवन में चले आये। रानी के साथ राजा ने भक्ति पूर्वक विधिवत व्रत किया। व्रत के करने से उनके शत्रुओं का नाश हुआ। उन्होंने अपना खोया हुआ राज्य पुनः पाया। गणेश जी की पूजा करने से सभी वस्तुयें सुलभ हो जाती हैं और सभी कार्यों में सफलता मिलती है।

स्कन्दकुमार जी कहते हैं कि व्यासजी के वचन सुनकर महाराज युधिष्ठिर ने हाथ जोड़कर उनसे फिर पूछा।

युधिष्ठिर ने कहा कि हे कष्टों को दूर करने वाले महर्षि! इस चतुर्थी के व्रत की विधि बतलाइये? किस नाम से, किस मास में, किस प्रकार गणेश जी की पूजा करनी चाहिए? तब इस व्रत में किस चीज का आहार करना चाहिए?

तब व्यास जी ने कहा कि हे राजन! अधिक मास में चतुर्थी को गणेश्वर के नाम से पूजा करनी चाहिए। लाल कनेर के फूल चढ़ाकर लड्डू आदि का भोग लगावें। लाल चंदन, रोली, अक्षत और दूब को एक-एक नाम से अलग-अलग चढ़ावें। तत्पश्चात 'विश्वप्रियाय नमः' कहकर (आचमन), 'ब्रह्मचारिणे नमः' (स्नान), 'गणेश्वराय नमः' से (वस्त्र), 'पुष्टिदाय नमः' से (चन्दन) चढ़ावें। 'विनायकाय नमः' से (पुष्प), 'उमासुताय नमः' से (धूप), रुद्रप्रियाय नमः' से (दीप), 'विघ्ननाशिने नमः' से (नैवेद्य) अर्पित करें। 'फलादात्रे नमः से (ताम्बूल), 'संकटनाशिने नमः' से (फल) चढ़ावें। इसके बाद विघ्नविनायक गणेश जी की प्रार्थना करें। हे सुन्दर मुखवाले गणेश जी! मैं भव बाधा से ग्रस्त भय से पीड़ित और क्लेशों से सन्तप्त हूँ, आप मेरे पर प्रसन्न होइए। हे दुःख दारिद्र्य के नाशक गणनायक जी आप मेरी रक्षा करें। हे विघ्नों के

☆ आरती जय जगदीश हरे ☆

ओ३म जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे।
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का, सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का।
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी, तुम बिन और न दूजा आस करुं जिसकी।
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी। पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता, मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति। किस विधि मिलूं दयामय तुमसे मैं कुमति।
दीनबन्धु दुःख हरता तुम ठाकुर मेरे। अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा।

—०—

स्तुति श्री गणेश जी की

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा, माता जाकी पार्वती पिता महादेवा। १।

एक दन्त दयावन्त चार भुजाधारी, माथे ऊपर तिलक विराजे मूसे की सवारी। २।

अन्धन को आंख देते कोढ़िन को काया, बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया। ३।

पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा, सूरश्याम शरण आये सुफल कीजे सेवा। ४।